TATKARE CHARITABLE TRUST, KOLAD
DR. SHREE. NANASAHEB DHARMADHIKARI
Kolad - Gove, Tal - Roha, Dist - Raigad, Pin - 402304,
Register No E-536 (Raigad) Date - 19/8/2006.
Email ID - dr.snd.acsc.kolad288@gmail.com / Principal Mob. No. 8983512652
CHAIRMEN :AVADHUT ANIL TATKARE SECRETORY : SANDEEP ANIL TATKARE PRINCIPAL: Dr.MUNDE SHANKAR S.

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the last five years

Sr. No.	Year of publication	Name of the author/s	Title of paper	Page No.
1	2017	Dr. Amalpure S.V.	भारतीय अर्थव्यवस्था का नया आधार पर्यटन	1-5
2	2017	Dr.Munde S.S.	धतंत खैरलांजी	6-9
3	2017	Dr. Amalpure S.V.	ओमप्रकाश वाल्मिकी के साहित्य में विमर्श	10-18
4	2018	Dr.Munde S.S.	रोहा तालुक्यातील कुणबी समाजाचे लोकजीवन	19-28
5	2018	Dr. Amalpure S.V.	मोहन राकेश के साहित्य मे मनोविज्ञान एक अध्ययन	29-33
6	2018	Dr. Amalpure S.V.	मराठी और हिंदी संत साहित्य में सामाजिक मूल्य	34-35
7	2019	Dr. Amalpure S.V.	मोहन राकेश के साहित्य मे मनोविज्ञान एक अध्ययन	36-39
8	2019	Dr. Amalpure S.V.	भारतीय साहित्य की कालजयी कृती या एक अध्ययन	40-44
9	2021	Asst. Prof. Pradhan N.A,	Crisis of covid-19 & India :Implications, Challenges & Remedies	45-48

KOLAD
ICT Dr. SND Arts, Com & Science College Gove - Kolad

PRINCIPAL
T.C.T.S.
Arts, Com & Science College
Kolad, Tal -Roha, Dist.-Raigad

The Founder President

Late. Barrister A. R Antulay

KONKAN UNNATI MITRA MANDAL'S

VASANTRAO NAIK COLLEGE OF ARTS & COMMERCE

Late. Barrister A. R. Antulay Educational Campus,
Murud - Janjira, Dist- Raigad, 402401 (MS),
Reaccredited With 'B' Grade by NAAC

ICSSR SPONSORED

One Day National Interdisciplinary Conference on

"Relevance of Tourism and its impact in Development in emerging economy of India with special reference to Maharashtra"

On Saturday 29th July 2017

Special Issue of an International
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES
Impact Factor SJIF (2016) – 6.177
UGC Approved Sr. No. 45269, ISSN- 2319-4766

CONVENER & CO ORDINATOR

Dr. S. P. Rangoonwala,
Principal, V. N. College, Murud - Janjira
Web-Site: vncmj.edu.in
E-mail: vrnaikcollege@gmail.com

88	भारतीय अर्थव्यवस्थाका नया आधार--पर्यटन *प्रा. आमलपूरे सुर्यकांत विश्वनाथ*	388-390
89	पर्यटन और सामाजिक जीवन *डॉ. एम. एच. सिद्दीकी*	391-394
90	शेरशाह का मकबरा : सूर वंश की विरासत *प्रा. डॉ. जी. व्ही. गट्टी*	395-396
91	पर्यटन--अनुवाद एवं सूचना प्रौद्योगिकी *डॉ. मोहसिन ख़ान*	397-402
92	पर्यटन का महत्व और महारश्ट्र पर्यटन का महत्व प्रो. देविदास क. बामणे	403-406
93	URDU KE MANZOOM SAFAR NAAME *Prof. Aafiya Uzma*	407-410
94	KONKAN KITNA HASEEN HAI *Prof. Mohamad Danish Gani*	411-416
95	ISLAM ME SIYAHAT KI HAQEEQAT AUR USKI ANWAH-W-AHAKAM *Prof. Shahid Ali Suleman Shaikh*	417-419
96	TARIKH SHAHAR AURANGABAD : SIYAHATI ATEBAR SE AASARE QADIMA KA EK UMDA MARKAZ *Dr. Ansari Farooque Ahmad Mohammad Bashir*	420-425
97	MAHARASHTRA ME SAIR-O-SIYAHAT *Dr. Seema Nahaid*	426-428
98	NAGPUR: SAIR-O-SIYAHAT KA MAQAM AUR BADHATE ROZGAR KE ZARAYE *Dr. Azhar Abrar*	429-430
99	URDU ME HAJJ KE SAFAR NAAME *Dr. Muzammil Sarkhot*	431-435

भारतीय अर्थव्यवस्था का नया आधार – पर्यटन

प्रा. आमलपूरे सुर्यकांत विश्वनाथ, डॉ. श्री. नानासाहेब धर्माधिकारी महाविद्यालय, गोवे कोलाड, ता.रोहा,
जि. रायगड महाराष्ट्र पिन 402304Email : sureshamalpure@gmail.com

प्रस्तावना : भारत में सबसे बडा सेवा और उद्योग है, जहाँ इसका राष्ट्रीय सफल घरेलू उत्पाद में 23% और भारत के कुल रोजगार में 8.78% योगदान है। भारत में वार्षिक तौर पर 05 मिलियन विदेशी पर्यटकोंका अगमन और 562 मिलियन घरेलू पर्यटकों व्दारा भ्रमण परिलक्षित होता है। विश्वयात्रा और पर्यटन परिषद के अनुसार भारत सर्वाधिक 10 वर्षिय विकास क्षमता के साथ 2009 से 2020 तक पर्यटन का आकर्षण केंद्र बन जाऐगा इसमें कोई दिक्कत नहीं है।पर्यटन उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एक मुख्य क्षेत्र के रुप में उभर कर आया है। इस के बारे में प्रदीप श्रीवास्तव जी लिखते है – " पिछले कुछ वर्षो में भारत में पर्यटन में महत्वपूर्ण वृध्दि हुई है। मसलन 1951 में जहाँ विदेशी पर्यटकों के भारत आने की संख्या मात्र 17 हजार थी वही आज संख्या बढकर 562 मिलियन हो गई है । 2003 में केवल 25 लाख विदेशी पर्यटक भारत में आये थे। इन आँकडो से यह स्पष्ट हो जाता है कि, भारत एक बडा पर्यटन स्थल है। जहाँ पर विदेशी पर्यटक के आने की काफी उत्सुकता होती है ।" – 1

भारतीय प्राच्य ग्रंथो में स्पष्ट रुप से मानव के विकास, सुख और शांति की संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अतिआवश्यक माना गया है। बिना पर्यटन मानव अंधकार प्रेमी होकर रह जाऐगा दुनिया से अलग रह जाएगा । पाश्चात्य विव्दान अगस्तिन ने कहाँ है –
" बिना विश्वदर्शन ज्ञान ही अधूरा है।" – 2

क्राफ ने पर्यटन के बारे में लिखा है – पर्यटन और निवासियों की यात्रा और उनके ठहरने से उत्पन्न संबंध और प्रकियाओं का योग है, ये लोग यहाँ स्थायी रुप से निवास नहीं करते है और यहाँ पर कमाई की किसी गतिविधी से नहीं जूडें है ।" –3

इस प्रकार पर्यटन लोगों का किसी बाहरी स्थान पर अस्थायी और अल्पकालिक गमन है । उसका निश्चित एवं सिमित काल होता है जैसे धूपकाल में कुछ पर्यटक आतें है, कुछ पर्यटक जाडे के दिन आते है तो कुछ बरसात के दिन या अलग अलग ऋतुओं का आनंद लुटाने एवं मनाने के लिए आते है । उनके लिए पैसा सबकुछ नहीं होता है वे सिर्फ अपना आनंदोत्सव मनाने के लिए शौकशान के साथ ज्ञान अर्जित करने के लिए सैर करते है ।

पर्यटन के अलग अलग अर्थ है जैसे यात्रा, सफर, देशाटन, तीर्थाटन, घूमना–फिरना आदि । यात्रा साहित्य की दृष्टि से यात्रा यात्रा साहित्य लिखनेवाले साहित्यकार की आँखे पूरे परिपार्श्व को देखने के लिए पूरी तरह खुली हुई होनी चाहिए । लेखक को यात्रा में अपने मनपर पडे प्रभावों अथवा प्रतिकियाओं की अभिव्यक्ती में भी पूर्ण समर्थ होना चाहिए । इस संदर्भ में सत्यकाम वर्मा लिखते है– " यात्रा साहित्य में लेखक की आँखो के साथ –साथ उसकी चेतना की सजगता भी आवश्यक है ।" – 4

हिंदी साहित्य में इस प्रकार के साहित्य सर्जकों में स्वामी सत्यदेव, परिव्राजक, राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, अज्ञेय, मोहन राकेश, अजय शर्मा आदि के नाम उल्लेखनिय है ।भारत बडा पर्यटन स्थल होने के कारण यहाँ पर विदेशी पर्यटक के आने की काफी उत्सुकता होती है । शायद यही कारण है कि डेड से दो दशक के दौरान युरोप व अमेरिका की कंपनियों ने अपने मालों की विकी के लिए भारत के बाजार को चुना इसके अलावा अन्य बडी कंपनियाँ भी भारत के पर्यटन बाजार में अपनी

संभावनाएँ तलाश रही है ।न जाने कैसे हमारे दिलो दिमाग में यह बात बैठ गई है कि रोजी –रोटी कमाना आसान है और बिना मेहनत के खूब कमाई करके आदमी ऐश बिना सकता है । आर्थिक उदारीकरण के दौर में दुनिया के संपन्न पश्चिमी देशों में से बढी है । संयुक्त राज्य अमेरिका में बेरोजगारी वृध्दि दर 8% वार्षिक से ज्यादा फ्रान्स, स्वित्झरलॅड जैसे देशों में अब में तो यह वृध्दि दर 10% से ऊपर पहुँच चुकी अब बाहरी लोगों को रोजगार देनेपर स्थानिय जनता और जनसंगठन खुला विरोध सस्ते श्रम की उपलब्धता भारत जैसे देशों के बेरोजगारों को अपने देश में रोजगार में ही ठेके पर काम देने की नई प्रथा शुरु की है। इससे भारत के साथ – साथ पर्यटन के रुप में एवं रोजगार प्राप्ती के रुप में भारत की ओर आकर्षित होने लगे स्तरपर भारत का विकास करने में सहायता बन गया है।

स्वास्थ पर्यटन का महत्व: भारत में हाल ही में बने उत्तरांचल और छत्तीसगढ पर्यटन उद्योग में विशेष रुप से उभर कर आया है। तामिलनाडू केरल उद्योग में राज्यों व्दारा स्थास्थ पर्यटन के रुप में पर्यटकों को आकर्षित करने से पर्यटन आयाम मिला है। देश के कई राज्यों में अपोलो अस्पताल, एस्कार्ट इन्स्टिटुट जैसे पर विश्व स्तर की चिकित्सा सुविधा और चिकित्सा विज्ञान के विशेष डॉक्टर जाने की एवं लंबी प्रतिक्षा एवं समय को बचाने के लिए भारत में ही ऐसे स्वास्थ ।वहीं भारत में अच्छी एवं सस्ती शल्यकिया की सुविधा उपलब्ध करने के कारण नया पैगाम मिला और अर्थव्यवस्था सजग बन गई।भारत में अच्छी सस्ती चिकित्सा प्राकृतिक वातवरण एवं विश्राम व पर्यटन के लिए भी विदेशी पर्यटकों की संख्या इसके अतिरिक्त विभिन्न रोगों के इलाज के लिए भारत में चिकित्सा की अच्छी इसलिए विदेशी पर्यटक चिकित्सा के साथ – साथ घूमने – फिरने भारत आते है। है आज पर्यटन उद्योग देश में तीसरा सबसे बडा विदेशी मुद्रा अर्जक माना जाता है।

ग्रामीण पर्यटन का महत्व: ग्रामीण विकास के लिए रणनिति के रुप में पर्यटन को भी बढावा दिया जा सकता है। भारत जैसे विशाल देश में 74% लागे गॉव में आस पास स्थलों को सुधारना, पार्को बनाना, बाड लगाना, कला को बढाना ऐसे कार्य है और विदेशी पर्यटक की आकर्षकता बढती है। ऐसे भारत में अनेक स्थल है जैसे – पुट्टापर्ती (आंध्रप्रदेश) पटकई (असाम) वलरामपुर (केरळ), पिपली (उडिसा) रघुराजपुर (उडिसा) इसके साथ ही विदेशी पयटकों को आकर्षित करने के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

समुद्री पर्यटन का महत्व: भारत में विदेशी पयटकों को आकर्षित करने के लिए विकास करना भी नितांत जरुरी है। अगर हम अंतराष्ट्रीय पर्यटन पर निगाह डाले पर्यटकों के लिए समुद्री यात्रा काफी लोकप्रिय हो रही है । भारत में तो समुद्री संभावनाएँ है। यद्यपि हाल ही में मुंबई – गोवा कुजसेवा शुरु की है। इसी तरह चालीस व्दीप समूहवाले अंदमान निकोबार के लिए कुज सुरु की है। इससे सरकार हो गई है । चैन्नई, विशाखा पटनम एवं कोलकत्ता से पोर्टब्लेअर के लिए कुज संभावना है।

हिल स्टेशन का महत्व: भारत में पर्यटन वृध्दि एवं इससे रोजगार तथा अर्थप्राप्ती के लिए [illegible] में [illegible]ड खींचने वाले इस हिल स्टेशन बनाये गये जहाँ विदेशी एवं देशी पर्यटकों की भीड बनी [illegible] है। [illegible] –उत्तरांचल में नैनीताल, कुमाऊँ की पहाडियों में बसा रानीखेत, हिमाचल की राजधानी [illegible], [illegible]लहौजी, कश्मीर का मुकुट–श्रीनगर, दार्जिलिंग, सिक्कीम की राजधानी गंगटोक, पूर्वीखासी पहाडियों के [illegible]दय में बसा शिलॉंग, महाराष्ट्र का मक्का कहा जानेवाला ग्रीष्मकालीन राजधानी महाबलेश्वर, [illegible]मिलनाडू की निलगिरी पहाडोंपर बसा उटा, एवं आंध्रतथा तमिल की सीमा पर बसा बालाजी तिरुपती [illegible]दि महत्वपूर्ण हिलस्टेशन है जो भारतीय अर्थव्यवथा को मजबूत बनाने में अपनी अदम भूमिका निभाते [illegible]

निरकर्श : उपर्युक्त विवेचन के अनुरुप हम निष्कर्ष रुप से कह सकते है कि, पर्यटन भारतीय [illegible]र्थव्यवस्था का एक महत्पवूर्ण आधार माना जाता है, जिसमे अलग – अलग प्रकार के पर्यटन [illegible] – [illegible]मीण, शहरी, हिलस्टेशन, समुद्री, स्वास्थ आदा इससे भारत में अन्य विदेशी पर्यटक घूमने आते है, [illegible]जगार मिलता है । कई कंपनियॉं भी विदेशों की भारत में बसी है इसका भी मुस्तफा भारत को मिलता [illegible] । इसलिए पर्यटन अर्थप्राप्ती का सबसे बडा मुआयजा माना जाता है ।

संदर्भ ग्रंथ

[illegible] श्रीवास्तव : लोकमत समाचार 2008
[illegible]स्टीन– पर्यटन की परिभाषा
[illegible]– पर्यटन
[illegible] सत्यकाम वर्मा – हिंदी का आधुनिक साहित्य पृ.248
[illegible]टन मंत्रालय भारत सरकार : पर्यटन विकास

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 3.452 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

July-August-September- 2017

Vol. 4 Issue 3

मराठी साहित्य संशोधन विशेषांक

Chief Editor :

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
quality higher education for all

Home About Us Organization Commission Universities Colleges Publications

UGC Approved List of Journals

You searched for **research journey**

Total Journals : 2

|| Home ||

Show 25 entries

Search:

View	Sl.No.	Journal No	Title	Publisher	ISSN	E-ISSN
View	1	40705	Research Journey International E Research Journal	Swatidhan Pub. Yevla		23487143
View	2	44117	Research Journey	Swatidhan International Publication		23487143

Showing 1 to 2 of 2 entries

Previous 1 Next

This Journal is indexed in :

- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)

RESEARCH JOURNEY

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
UGC Approved Journal- Sr. No. 40705 & 44117 July-Aug.-Sept. 2017 | Vol. 4, Issue 3

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शोध निबंधाचे शीर्षक	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
@	संपादकीय	- डॉ. धनराज धनगर	05
1	आदिवासींचे धवळे : उगम आणि विकास	- डॉ. अंजली मस्करेन्हस	06
2	लोकसाहित्यातील लोकसंस्कृतीतून येणाऱ्या लोकप्रयोज्य कलांचा अभ्यास	- डॉ अनिता सोनवणे	15
3	गोर बंजारा लोकसाहित्यातील मानवी मूल्ये	- प्रा. नेमीचंद चव्हाण	20
4	बंजारा लोकसाहित्यातील समाजदर्शन	- प्रा. तुकाराम चव्हाण	28
5	लोकसाहित्य संशोधनाच्या नव्या दिशा	- डॉ. निवृत्ती मिसाळ	33
6	लोकसाहित्य संशोधन अभ्यास पद्धती	- डॉ. सागर लटके	35
7	मराठी आख्यायिका : एक आकलन	- डॉ. भाऊसाहेब गमे	40
8	महानुभावीय साहित्याचे संशोधन-संपादन-प्रकाशन : पार्श्वभूमी व संधी	- डॉ प्रमोद आंबेकर	44
9	महानुभावीय व वारकरी संप्रदायाच्या अनुषंगाने मराठी साहित्य	- श्री अनिल महाजन	49
10	'संतु आंतोनीची जीवित्वकथा' या ग्रंथावर ज्ञानेश्वरीचा प्रभाव	- प्रा. विनय मडगावकर	54
11	संत ज्ञानेश्वरांचे कार्य आणि कर्तुत्व	- एस. आर. साळुंखे	58
12	संत चोखामेळा यांच्या अभंगातील समाज वास्तव	– डॉ. उज्ज्वला पाटील	64
13	नामयाची दासी जनी	- डॉ. वसंत शेंडगे	68
14	समर्थ रामदास स्वामींचे प्रशासन विषयक विचार	- डॉ. अलका बडगे	73
15	शाहिरी वाङ्मयातील ध्रुवतारा : भाऊ फक्कड	- प्रा. संगीता सूर्यवंशी	77
16	गीतकार ना. धों. महानोर	- डॉ. तुषार चांदवडकर	85
17	विठ्ठल वाघ यांच्या कवितेतील कृषिनिष्ठ जाणिवा	- डॉ. ममता दयणे	89
18	डॉ. यशवंत मनोहरांच्या कादंब-यांतून अभिव्यक्त होणारा आंबेडकरी स्त्रीवाद	– प्रा. मनीषा डोंगरे	94
19	धादांत खैरलांजी : स्त्री दृष्टीकोनातून	- डॉ. शंकर मुंढे	97
20	मराठी साहित्यातील दलित स्त्रियांची आत्मकथने :एक परीक्षण	- डॉ. मनीषा नागपुरे	99
21	दलित साहित्यातील कथेचे अवलोकन	– डॉ. चंद्रमणी गजभिये	105
22	शंकरराव खरातांची दलित कथा एक आकलन	- डॉ. आर. एम. केदार	109
23	महात्मा फुले यांच्या वाङ्मयातील वैचारिकता	–प्रा. मिलिंदकुमार देवरे	113
24	तिसऱ्या सहस्त्रकाची कविता : आस्वाद आणि आकलन	- डॉ. सिद्धार्थ भगत	117
25	मराठी भाषेची स्थिती - गती	- डॉ. स्नेहल मराठे	124
26	समकालीन भारतीय साहित्य	– प्रा. मर्जेराव जाधव	128
27	मराठी नाट्य वाङ्मयाची पूर्व पीठिका	– डॉ. राम चौधरी	133

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) – 3.009, (GIF) –0.676 (2013)
UGC Approved Journal- Sr. No. 40705 & 44117 July-Aug.-Sept. 2017 | Vol. 4, Issue 3

धादांत खैरलांजी !... स्त्री दृष्टीकोनातून

डॉ. शंकर शिवाजी मुंडे
डॉ.नाना साहेब धर्माधिकारी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय
गोवे–कोलाड, ता. रोहा,
जि. रायगड.

धादांत खैरलांजी हे प्रा. प्रज्ञा दया पवार यांचे दोन अंकी ६२ पानाचे छोटेसे नाटक असून २९ सप्टेंबर २००७ रोजी प्रकाशन झाले असून या नाटकाचे पहिले जाहिर वाचन मुंबई येथील चेतना महाविद्यालयाच्या प्रेक्षागृहात दि. १२ ऑगस्ट २००७ रोजी प्रा. वीणा सानेकर, अभय कांता आणि नाटयलेखिका प्रा. प्रज्ञा दया पवार यांनी केले.

प्राचीन काळापासून समाजव्यवस्थेतील विषमतेमध्ये दलित हा तर दलितच आहेत. तशीच स्त्री सुध्दा दलितच आहे. दलित वर्गातील पुरुषाच्या वाटयाला हि दलितत्व म्हणून एकदा येत असलतरी स्त्रीच्या वाटयाला मात्र दलित व स्त्री म्हणून दोनदा येत, मग ती स्त्री ग्रामीण भागातील अल्पशिक्षित गरीब असो अथवा शहरातील उच्च शिक्षित असो असेच काहिसे चित्रण धादांत खैरलाजी नाटकातील आहे.

काही वर्षापूर्वी महाराष्ट्रातील भंडारा जिल्हयातील खैरलांजी या गावातील भोतमांगे या दलित परिवारातील प्रियंका ही एक महत्वकांशी तरुणी आहे. तिची आई सुरेखा छोटा व्यवसाय करुन घर चालवते. दोन मुले, नवरा असा तीचा परिवार गावातील एकमेव दलित कुटूंब. गावातील दोन गटातील भांडणाच पर्यावसन म्हणजे प्रियंका व सुनिता यांच्यावर झालेले अमानुष अत्याचार. दोन्ही भावांचे खुन खैरलांजी या दलित अत्याचाराच्या घटनेन त्यावेळी सारा महाराष्ट्र हादरला होता. इतकेच नाही तर पुणे–मुंबई रोज धावणारी डेक्कन क्विन रेल्वे जाळे पर्यंत प्रतिक्रीया उमटल्या होत्या, वेगवेगळया ठिकानी रास्तारोको जाळपोळ निदर्शने मोठया प्रमाणात घडली होती.

या घटनेला अनुसरुन लेखक प्रा. प्रज्ञा दया पवार यांनी दोन अंकी धादांत खैरलांजी हे नाटक लिहले आहे.

प्रा. प्रज्ञा दया पवार यांनी दलित चळवळीतील अमिताभ बनसोडे व त्यांची पत्नी वैशाली गजभिय ही इतिहास विषयाची प्राध्यापिका असते. ती ब्राहमणवादी असलेल्या संस्थेच्या कॉलेजात प्राध्यापिका असते. ती विद्यार्थी प्रिय शिक्षक असते आणि खैरलांजीच्या घटनेविरोधात मंत्रालयावर निदर्शन मोर्चात सहभागी होते.

तिच्या महाविद्यालयात रिटायर्ड कर्नल प्रसाद सहस्त्रबूध्देचे व्याख्यान असते. ते प्रारंभीच श्रोत्यांमधील मुस्लिम विद्यार्थांना निघून जाण्यास सांगतात ते वैशालीला आवडत नाही, व्याख्याना नंतरच्याा खुल्या चर्चेत ती सहस्त्रबूध्देंच्याा इस्लाम विरोधी वक्तव्यावर आपली प्रतिक्रिया नोंदविते. 'सर तुम्ही म्हणालात मुस्लिम विद्यार्थ्यांनी बाहेर गेले तरी चालेल विद्यार्थ्यांना लक्ष करण्याच काहिच कारण नव्हते, तुम्ही म्हणालात की मुस्लिम अस वागतात, कारण त्यांचा धर्म त्यांना तस वागायला सांगतो. हे बरोबर नाही. ना तुम्ही इस्लाम जाणता ना मुसलमानांना, कुठलाच धर्म सर्वेसर्वा बनुन माणसाच्या जगण्याला सर्व पातळयावर नियंत्रीत करू शकत नाही. धर्म नेहमीच प्रस्थापित सत्ताकारण, अर्थकारण, समाजकारणाच्या हातात हात घालून झेंडा फडकवत ठेवत असतो.

प्रा. वैशालीचे हे बोलणे ब्राहमणवादी विचाराचे प्राचार्य व संस्था चालक नाराज होउन खैरलांजीच्या घटने विरोध म्हणून मंत्रालयावर मोर्चात सहभाग याचाही राग प्रचार्य यांना येतो. वैशालीला कारणे दाखवा नोटीस देउन प्रकरण तिच्या राजीनाम्या पर्यंत जाते.

प्रा. वैशाली गजभीय यांची आणि तिचे सहकारी प्राध्यापक प्रा. आकाश देशपांडे यांच्यातल्या निखळ मैत्रीच्या संबंधातील संदर्भ चारित्र्यहिन पर्यंत चर्चा घडवून आणल्या जातात. प्रा. आकाश यांचे नेमकेच लग्न जमलेले असते पण या चर्चेमुळे जमलेले लग्न मोडते की काय? अशी भिती वाटते

याच दरम्यान वैशालीचा पती अमिताभ बनसोडे अमिताभ व आनंद भुस्कुटे च्या चित्रपटासाठी खैरलांजी प्रकरणावरील पटकथा तयार करतो. अमिताभ हा दलित चळवळीचा सक्रिय कार्यकर्ता असतो. तर आनंद भुस्कुटे दिगदर्शकाचे काम करतो त्याच्या डोक्यात खैरलांजीची फ्रेम तयार असते पण ती लेखकाच्या तोंडून वदउन पटकथानक लिहूण घेण्याचा अट्टाहास दिसून येतो.

खैरलांजी चित्रपटातील नाईका ही प्रियंका भोतमांगे हि एक चुण–चुनीत मुलगी आहे. तिला शाळेत जायचे आहे. खुप शिक्षण घेवून मिलट्रीत जायची आहे, दुसऱ्या बाजूला डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ची चळवळ पुढे नहायची आहे. दलित नेतृत्वाबद्दल बोलते आहे. अशी दिव्य स्वप्न पाहणारी अशी मुलगी आहे. तिचा दुदैवी अंत होतो. तीच आई सुरेखा भोतमांगे ती गावात शरीर विक्रीचा धंदा करते त्यातुन ही हात्या कांडाचा उदय होतो. असे चित्रन या चित्रपटात दाखवायचे असे आनंद भुस्कूटे दर्शवतो.

ही पटकथा ऐकूण वैशाली गजभिये आणि अमिताभ बनसोडे यांच्यात चर्चा अंती वैशाली अमिताभला विनंती करते हे जे माझ्या कॉलेजमध्ये घडतेय ते या सिनेमात आणल तर?

खैरलांजी मध्ये हत्याकांड होणे अवघ्या भोतमांगे कुटूंबाचा बळी जान मानसाच्या अस्तित्वालाच अतिशय घाणेरडया पध्दतीने मिटवून टाकण चा पेक्षा वेगळ इथ काय घडतय माझ्या बाबतीत ही असेच घडले आहे.

वैशालीच्या राजीनाम्याची बातमी दलित चळवळीतील महिलांनी आक्रमक पवित्रा घेवून कॉलेजच्या समोर आमरण उपोषण सुरु केले जाते. त्या सर्व दलित संघटना सहभागी होतात व महाविद्यालयातील तरुण विद्यार्थी सहभागी होतात यांचा दबाव संस्थेवत आणि कॉलेज प्रशासनावर आलेला असतो. दुसरीकडे वृत्तपत्रातून बातमी वाचून वैशालीचे काका मानस कन्या रणजीत सदाशीव आंबेडकर चळवळीतील एक वरिष्ठ कार्यकर्ते संस्थाचालकाच्या राजकीय पक्षाचे खासदार आहेत. यांना सर्व हाकीकत समजते संस्थेला बोलून तडजोड घडवून आणतात आणि वैशाली पुन्हा प्राध्यापक म्हणून कामावर घेतले जाते.

या दरम्यान वैशालीचे पती अमिताभ बनसोडे, आनंद भुस्कूटे यांच्यासाठी चित्रपटाची पटकथा बनवतो त्यात प्रा. वैशाली आणि प्रा. आकाश यांच्यातील संबंधांच्या काल्पनीक पटकथानक तयार करतो. त्यात मुक्ता पवार आणि आशूतोष यांची पात्रे रंगवतो.

त्यात मुक्ता व आशुतोष हे प्रकरण शरीर पातळीवर रेखाटले असते. अमिताभची ही पटकथा वैशालीला आवडत नाही. ती म्हणते "तु माझा संघर्ष सिनेमात आणलास खरा पण त्याच्या जोडीला मुक्ता–आशूतोषचं नातशरीर पातळीवर अनलेस मग आनंदजी तरी या पेक्षा वेगळ कार्य करू पाहत होते आपण कूटल्या साच्यात अडकलो आहेत. याची जाणीव करून
देते.

नाटकाच्या अखेरीस असलेला वेशालीच्या संबंध अधिक बोलका आहे. ती अमिताभला म्हणते रणजित काकांनी एक फोन केला. आणि सगळा प्रश्नच सुटला पण खैरलांजीच काय कुणाच्या फोनवर थांबणार आहे सगळ तिथ सुरेखा भोतमांगे लढता - लढता मरणाला सामोरे गेली आणि आपण? आपण तर जगतो आहोत सस्पेशनच्या विरोधात कोर्टात जाण्याचा मुददा कसा सहज बाजुला पडला आपल्या कडून अमु खरं खैरलांजी सुरेखा भोतमांगेचा आहे. आणि आपलं? आपल आहे. धांदात खैरलांजी!

प्रा.प्रज्ञा दया पवार यांच प्रस्तुत नाटक विशूध्द स्त्रीवादी तर आहेच शिवाय ब्राम्हणवादी व्यवस्था कशी चिरबंदी आहे आणि त्या व्यवस्थेला विरोध करणारेही हळू . हळू त्याच व्यवस्थेचा एक भाग कसा होऊन जातात. यावर झणझणीत प्रकाश टाकणारे आहे.

———ooo———

International Research Fellow Associations

September - 2017

E-ISSN: 2321-4953

IRFA'S UNIRESEARCH

Multidisciplinary International E-Research Journal

Vol.- IX Issue - III

Indexed in DRJI & Indian Citation Index *Double Blind Peer Reviewed Journal*

UGC Approved List No. 63005 *Cosmos Impact Factor - 3.020 [2015]*

हिंदी भाषा एवं साहित्य संशोधन विशेषांक – भाग ३

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
quality higher education for all

Home | About Us | Organization | Commission | Universities | Colleges | Publications

UGC Approved List of Journals

You searched for unireseareh

Total Journals : 1

|| Home ||

Show 25 entries Search:

View	Sl.No.	Journal No	Title	Publisher	ISSN	E-ISSN
	1	63005	Uniresearch- Multidisciplinary International E-Research Journal	International Research Fellows Association	23214953	

Showing 1 to 1 of 1 entries

Previous 1 Next

For Students | For Faculty | More

Guest Editor
Dr. Gajanan S. Wankhede
Asst. Professor, Dept. of Hindi,
Baliram Patil Arts, Science &
Commerce College, Kinwat (Nanded)

Chief Editor:
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Asst. Professor, Dept. of Marathi,
M.G.V.'s Arts & Commerce College, Yeola.
Nashik [M. S.] India.

UNIRESEARCH

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details, visit us on: www.uniresearch.net.in

'Uniresearch'- International Multidisciplinary E-Research Journal
हिंदी भाषा एवं साहित्य संशोधन विशेषांक भाग - ३
UGC Approved List No. 63005 | Impact Factor - 3.020
ISSN 2321-4953 | September – 2017 | Vol. 9 Issue. 3

EDITORIAL BOARD

Chief & Executive Editor:
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assistant Professor,
Dept. of Marathi,
M.G.V.'s Arts & Commerce College, Yeola,
Dist - Nashik [M.S.] India.

Associate Editors:
Mr.Tufail Ahmed Shaikh, King Aziz City for Science & Technology, Riyadh Kingdom Saudi Arabia.
Dr. Anil Dongre, Head, Dept. of Management, North Maharastra University, Jalgaon.
Dr. Bhausaheb V. Game, Act. Principal, MGV's Arts & Commerce College, Yeola, Nashik.
Dr. Leena Pandhare, HoD English, L. V. H. College, Panchavati-Nashik [M.S.] India.
Dr. P. K. Shewale, Vice Principal, MGV's Arts, Commerce & Science College, Harsul, Nashik.
Dr. Rekha Gajare, Bhusawal Arts, science & P.O. Nahata,Commerece College, Bhusawal.
Dr. Gajanan Wankhede, Asst. Prof. Dept. of Hindi.Baliram Patil College, Kinwat, Nanded
Dr. B. M. Sonawane, M.G.V.'s Arts College, Saundane, Dist - Nashik
Prof. Atul Suryawanshi, S.S.M.M. College, Pachora
Prof. Vijay Shirsath, Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon
Prof. B. P. Shewale, MGV's Arts, Commerce & Science College, Saundane, Nashik.
Mr. Munaf Shaikh, North Maharashtra University, Jalgaon
Prof. D. M. Badure, N. S. B. Arts, Commerce & Science College, Nanded.
Mr. Vinod Bhalerao, J.N. V. Kangda Himachal Pradesh.

AdvisoryBoard:
Dr. M. S. Pagare, Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon.[M.S.]
Dr. Marianna kosic, Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
Dr. S. M. Tadkodkar, Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University.Goa,India.
Dr. Bajarang Korde, Professor & Head, Dept. of English, Pune University. Pune, [M.S.] India
Dr. R. P. Singh, Dept. of English and Modern European Languages University of Lucknow [U.P.] India
Dr. N. V. Jayaraman, Director-Training and Placement, SNS Technical Institutions, Coimbatore

Review Committee:
Dr. Shailendra Lende, Dept. of Marathi, R.T.M. Nagpur University, Nagpur
Dr. Sayyed Zakir Ali, HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
Dr. R. R. Kazi, North Maharashtra University, Jalgaon.
Dr. Vandana Chaudhari, KCE's College of Education, Jalgaon.
Dr. Vidya Vyavhare, HOD, Marathi, KCE's M. J. College, Jalgaon.
Dr. Sanjay Baviskar, HOD, Marathi, D. N. Bhole College, Bhusawal.
Dr. KalpanaPatil, HOD, Hindi, D. N. College, Faizpur.
Dr. K. R. Udmale, Rtd. HOD, Cost and Works Accounting, M.S.G. College, Malegaon Camp, Nashik,

Contact us on : uniresearch99@gmail.com / researchjourney2014@gmail.com
Mobile No. : Prof. Dhanraj T. Dhangar - (President, IRFA) + 7775982534 / 9665398258

Publishers : International Research Fellows Association (IRFA) &
Mrs. Swati Sonawane, Director, Swatidhan Publication, Nashik (Mo. 9665398258)

The respective authors are responcible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Our review committee members have checked papers on their level best to stop furtive literature. Please send your valuable suggestions to us on uniresearch99@gmail.com

- Executive Editor

'Uniresearch'- International Multidisciplinary E-Research Journal
हिंदी भाषा एवं साहित्य संशोधन विशेषांक भाग - ३
UGC Approved List No. 63005 | Impact Factor - 3.020
ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शोध निबंधाचे शीर्षक	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
@	संपादकीय	- डॉ. गजानन वानखेडे	04
	हिंदी भाषा		
01	हिंदी भाषा का वैश्विक स्वरूप	- डॉ. संजय कांबळे	05
02	विश्व में हिंदी भाषा	- प्रा.एम. डी. नायकू	10
03	वैश्विकीकरण मे भाषा का महत्त्व	- राजाराम तायडे	18
04	वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य मे राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रासंगिकता	- डॉ. करुणा अहिरे	22
05	दूरदर्शन और हिंदी	- डॉ. सुनिता कावळे	24
06	हिंदी में रोजगार के अवसर	- डॉ. महेंद्रसिंग पवार	28
	संत साहित्य		
07	विद्रोही मीरा	- डॉ. शिल्पा जीवरग	31
08	सुफी संतो का साहित्यिक योगदान	- सरला तुपे	34
09	संत नामदेव : एक अध्ययन	- डॉ. शशी साळुंके	37
10	हिंदी साहित्य मे मराठी संत नामदेवजी का योगदान	- सुश्री वंदना पाटील	40
11	हिंदी भाषी संतो का साहित्यिक योगदान	- डॉ. रविंद्रनाथ पाटील	44
12	संत ज्ञानेश्वर एवं मीराबाई की भक्ति में सामाजिक समरसता का बोध	- डॉ. सविता चौधरी	48
13	मध्ययुगीन हिंदी साहित्य का आशावादी दृष्टिकोण	- डॉ. रमा दुधमांडे	53
	दलित साहित्य		
14	हिंदी दलित साहित्य में चेतना	- गजानन हरिभाऊ सर्वज्ञ	56
15	माता प्रसाद का नाटक अछूत का बेटा में दलित चिंतन	- डॉ. आनंद बक्षी	58
16	ओमप्रकाश वाल्मिकि के साहित्य में दलित विमर्श	- प्रा. सूर्यकांत आमलपुरे	62
	समकालीन साहित्य		
17	संवेदनाओं के स्पंदन : 'रिश्तों के एहसास'	- डॉ. रेखा गाजरे	69
18	दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना का अनुशीलन तुलनात्मक अध्ययन	- डॉ. वनिता पवार	75
19	प्रसाद और तांबे के काव्य में संगीत	- प्रा. अनंत केदारे	83
20	छायावादी काव्य-प्रकृतीपर चेतना का आरोप	- डॉ. शोभा रावत	90
21	हिंदी कथा एवं उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता	- डॉ. मनिष टेंभरे	96
22	बालसाहित्य की विशेषताओं के आधार पर 'हसते फुल महकते फुल' कृति का मूल्यांकन	- डॉ. संगीता जगताप	100
23	समकालीन कथासाहित्य निर्माण में नासिरा शर्मा का योगदान	- हरगोविंद टेंभरे	105

ओमप्रकाश वाल्मिकि के साहित्य में दलित विमर्श

प्रा. आमलपूरे सूर्यकांत विश्वनाथ
हिंदी विभाग अध्यक्ष
डॉ. श्री. नानासाहेब धर्माधिकारी महाविद्यालय
गोवे कोलाड, ता. रोहा, जि. रायगड महाराष्ट्र
मो नं. ८०८७८०७३८७@ ९४२१४५१७०३
Email : sureshamalpure@gmail.com

आधुनिक हिंदी साहित्य में साहित्यकारों ने विमर्श का एक नवीन आकाश निर्मित किया है । जिसके अंतर्गत दलित साहित्य को चिंतन का विस्तृत फलक प्रदान किया गया है। मूलतः भारतीय समाज में वर्ण-व्यवस्था के आधार पर जो जातिगत बंटवारा हुआ वह पूर्णतः असमानता, वर्चस्व, शोषण पर आधारीत है। सामाजिक अंतर्विरोधों से उपजी विसंगतियों ने दलितों में गहन नैराश्य पैदा किया है। दलित चेतना का पूरा चित्रण दलित साहित्य मे समाहित है। इसका संबंध संस्कारों, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से है। मूलतः भारतीय समाज में वर्ण - व्यवस्था के आधार पर जो जातिगत बंटवारा हुआ यह पूर्णतः असमानता, वर्चस्व और शोषण पर आधारीत है।

आज समय की माँग है कि उन व्यक्तियों पर प्रकाश डाला जाए जो इलित चेतना के आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभा रहे है, जिससे कि दलित आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने वालों से प्रेरणा लेकर अन्य लोग भी इस प्रकार के सामाजिक न्याय के पक्ष में खूद को खडा कर सके तथा अपने-अपने तरिके से और अपनी अपनी जगह से इस आंदोलन में योगदान दे सके एवं समय पडनेपर नेतृत्व भी प्रदान कर सके । ऐसे व्यक्तियों में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मिकी का स्थान अग्रणी है। उन्होंने अपने साहित्य केव्दार इस प्रकार के आंदोलनो को, निस्वार्थ भावना के साथ, जो योगदान दिया है, वह सच्चे अर्थो में अतुलनीय है। उन्होंने जो भी कार्य किया, वह ठोस व दलित समाज की पीडा की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

दलित साहित्य का अर्थ

दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है - जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया, शोषित, उत्पीडीत, सताया हुआ, उपेक्षित, घृणित आदि। दलित लेखकों ने दलित शब्द की अलग-अलग परिभाषाएँ दी है-

डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन- " दलित वह है जिसे भारतीय संविधान में अनूसुचित जाति का दर्जा दिया है । " १

कंवलभारती के अनुसार - " दलित वह है जिसपर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है, जिसे शिक्षा गृहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से रोका गया और जिसपर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही और वही दलित है और इसके अंतर्गत वही जातियाँ आती है, जिन्हें अनुसुचित जातियाँ कहा जाता है।" २

बाबूराव बागूल :- " मनुष्य की मुक्ती को स्वीकार करनेवाला, मनुष्य को महान माननेवाला वंश, वर्ण और जाति श्रेष्ठत्व का प्रबल विरोध करनेवाला साहित्य ही दलित साहित्य है। " ३

प्रेमकुमार मणि :- " दलितों के लिए, दलितों के व्दारा लिखा जा रहा साहित्य ही दलित साहित्य है। यह विलास का नहीं आवश्यकता का साहित्य है। संपूर्ण विज्ञान उसकी दृष्टि है और पीडीत मानवताका उध्दार उसका दृष्ट है। दलित साहित्य वह प्रकाशपुंज है, जो अंधेरे में उतरा है। " ४

दयानंद बटोही - " दलित साहित्य दलितों की चेतना को अभिव्यक्ती प्रदान करता है इसमें दलित मानवता का स्वर है । एक नकार है, विद्रोह है, यह विद्रोह उस व्यवस्था के प्रति है जो सदियों से दलितों का शोषण कर लाभ की स्थिती में है ।"५

ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

डॉ. प्रेमाशंकर के अनुसार :-

" दलित साहित्य दलितों का, दलित व्दारा दलितों की भाषा में लिखा गया जिवंत साहित्य है जो अपने सच्चे अनुभवों से सोए हुए साथियों को जगाकर उनकी गरीमा गौरव, अस्मिता , आत्माभिमान तथा अस्तित्व के प्रति विश्वास करने का साहित्य है ।" ६

डॉ. एन. सिंह के अनुसार :-

" दलित का अर्थ है, जिसका दलन, शोषण और उत्पीडन किया गया हो, सामाजिक आर्थिक और मानसिक धरातल पर संपूर्ण दलित साहित्य ऐसे ही उत्पीडीत और शोषित लोगों की बेहतरी के लिए दलित लेखकों के व्दार लिखा गया साहित्य ।" ७

माता प्रसाद के अनुसार :-

" दलित साहित्य वह साहित्य है, जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक क्षेत्रों में पिछडे हुए उत्पीडित, अपमानित, शोषित जनों की पीडा को व्यक्त करता है। दलित साहित्य कठोर अनुभवों पर आधारीत साहित्य है, जो संघर्ष से उपजा है, जिसमें समता और बंधुता का भाव है और वर्ण -व्यवस्था से उपजे जातिभेद का विरोध है ।" ८

ओमप्रकाश वाल्मिकी :

" दलित साहित्य भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद को नाकारता है तथा पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है । दलित शब्द उन्हें सामाजिक पहचान देता है, जिनकी पहचान इतिहास के पृष्ठों से सदा के लिए मिटा दी गई, जिनकी गौरवपूर्ण संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर कालचक्र में खो गई है ।" ९

डॉ.सत्यप्रेमी :-

"दलित साहित्य में प्रयुक्त शब्द के अंतर्गत संविधान और शासन व्दारा घोषित अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछडे वर्ग के लोग ही नहीं आते, अपितु, दलित शब्द एक संवेदन है, विचार है, जिसका अर्थ दबाया गया से है, दबा हुआ नही ।" १०

हिंदी दलित साहित्य के अर्थ एवं अवधारणा पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि, हिंदी के दलित - लेखन के सम्मुख आज कई तरह की चुनैतियाँ है। इस साहित्य को नवीन भाषा, नवीन संदेश के अपने प्रतिमान, मुहावरे और सौंदर्यबोध को नवरूप में विकसित करना है। दलित साहित्य निरंतर विकसित भी हो रहा है इसकी मूल अवधारणा क्रांति के साथ - साथ मानवतावादी मूल्यों के नवसृजन पर आधारीत है। दलित साहित्य अन्याय को स्वर देते हुए किसी वर्ग के प्रति अन्याय करने को नहीं उकसाता बल्कि अन्याय की पीडा से कराहते हुए मनुष्य की वाणी की अभिव्यक्ति है।

आजादी के ७० साल बाद भी दलित वर्ग की स्थिती मूलभूत रूप से यथावत सी ही बनी हुई है। अधिकांश दलित लोग निर्धनता की रेखा से नीचे है। दलित अत्यंत प्रतिकुल परिस्थितियों में जीवनयापन करते है। दलितों के जीवन स्तर को उपर उठाने के लिए योजना के क्षेत्र में राज्य के हिस्सेदारी, आवश्यक क्षेत्रों पर्याप्त सार्वजनिक व्यय तथा आर्थिक क्षेत्र में सुरक्षा की जरूरत है। दलित पीढी विकसित हुई शिक्षित हुई परंतु रोजगार के अवसर नहीं मिले। यह साहित्य दया, याचना का नहीं है, यह क्रांति विद्रोह व स्वाभिमान का साहित्य है। यह इतना व्यापक है कि इसकी कोई सीमा नहीं । वास्तव में आज दलित साहित्य संर्घषित आम आदमी की आवाज है। दलित साहित्य अनेक युगीन संभावनाओं का समावेश किए हुए है तथा इसका एक-एक शब्द संघर्षो को अपने आंचल में समेरे हुए है तथा वह अनवरत शोषण - उत्पीडन-अभिशापित विपन्न जीवन से मुक्त होने का आहवान करता है। दलित साहित्य क्रांति एवं विद्रोह का शाश्वत साहित्य है।

दलित साहित्य का उद्‌भव एवं विकास

किसी भी भाषा का जन्म उसके अपने परिवार से होता है, बडे-बडे कबीले अपनी भाषा में अपने लोकगितों को पीढी-दर-पीढी गाते है। दलित साहित्य का प्रारंभ भी लोकगीतों के रूप में ही हुआ है, ये लोकगीत

आँचलिक स्तर पर मिलते है । हिंदी दलित काव्य का विकास संत कबीर और रैंदास से माना जाता है। आधुनिक युग में ओमप्रकाश वाल्मिकी, कंवल भारती, सुशील टाक मौरे, जयप्रकाश कर्दम, डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन आदि है। कथा साहित्य में हिंदी की पहली कहानी १९०० के बाद ही सरस्वती में दलित कहानी प्रकाशित हुई। प्रेमचंदजी ने कफन, ठाकूर का कुँआ, मंत्र, सदगति, पूस की रात में दलित का चित्रण किया है। उपन्यास में नैमिश राय, जयप्रकाश कर्दम, प्रसिध्द है। आत्मकथाओं में डॉ. आंबेकर की प्रेरणा से ही दलित आत्मकथा का लेखन हुआ है। इसके संबंध में डॉ.श्यौराज सिंह बेचैन कहते है - " वस्तुत यह डॉ. आंबेडकर ये जिनकी प्रेरणा और प्रभाव से ही आत्मकथा लेखन प्रारंभ हुआ, उन्होंने स्वंय अंतरंग बाजे प्रो. सत्यबोध हुदलीकर के डायरी में दर्ज कराया था । तत्कालीन मराठी साहित्य की पत्रिका नवयुग में प्रकाशित किया । इसके बाद डॉ. आंबेडकर ने मै कैसे बना ? शीर्षक से आत्मकथा लिखना प्रारंभ किया था । इसके प्रकाशन के बाद अनेक मराठी आत्मकथा प्रकाशित हो गई ।" ११

हिंदी कथा साहित्य में दलित लेखकों के बहुत अधिक नाटक नहीं मिलते है। हिंदी क्षेत्र में प्रायः रैंदास और आंबेडकर जयंती के अवसर पर नाटकों के मंचन की प्रथा रही है।

कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकी के कथा साहित्य में दलित विमर्श

दलित वर्ग के साथ हजारों वर्ष से जो निर्णय निष्ठुर और अमानवीय व्यवहार निरंतर हुआ है, उसके परिणामस्वरूप कला, साहित्य, संस्कृति आदि से उसका नाता टूट सा गया था। उसमें दलित वर्ग की भागीदारी बहुत कम हो गयी थी। मध्यकाल में एक दौर ऐसा आया जब लेखन और चिंतन के क्षेत्र में दलित, वंचित, मुसलमान, महिला आदि वर्गों का सर्वाधिक योगदान रहा।

सन १९२० के बाद का समय भारत में कई तरह के नये विचारों के विस्तार का समय है। आंबेडकरवादी विचार भी उसी समय कम - से -कम दलित वर्ग के एक छोटे से हिस्से तक पहुँचने लगे थे। वर्णव्यवस्था को हम जबतक छोड नही सकेंगे तबतक दलितों का विकास नहीं होगा। वह जडे बहुत गहरे है तो उसे उखाडकर फेंकना जरुरी है। यही काम डॉ. बाबासाहब ने किया है।

मराठी में दलित साहित्य का विकास एक तरहे के सांस्कृतिक विस्फोट के रूप में हुआ है। हिंदी साहित्य में दलित साहित्य की चर्चा नौवे दशक से प्रारंभ हुई है। प्रथम साहित्यकार के रुप में ओमप्रकाश वाल्मीकी का नाम आता है। उन्होंने अपनी कलम की आवाज के माध्यम से दलित साहित्य को उच्च शिखर पर पहुँचा दिया। उनके साहित्य में दलित जीवन की मर्म वेदना का चित्रण है।

दलित साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मिकी की पहचान मुख्य तथा इनकी आत्मकथा ' जूठन ' से हुई है। इस आत्मकथा के एक एक शब्द सत्य है, उसे अनुभवों से पेश किया है, उनके साक्षी वे सभी है, जिनका जन्म सवर्ण परिवारों में हुआ है और जिन्होंने अपने ही आस-पास किसी न किसी तरह ओमप्रकाश वाल्मीकी को अपमानित और प्रतादित होते देखा है, स्वंय अपने ही परिजनों व्दारा या जाने - अनजाने स्वंय अपने व्दारा ही । इसलिए इसकी सत्यता का सबसे बडा गवाह हमारे इर्द-गिर्द का यह समाज है। दलित की पीडा को एक दलित ही समझ सकता है यह जरूरी नहीं है। हमारे समाज में कुछ लोग, हमारे समाज का एक हिस्सा बन चुके दलित वर्ग के दु:ख दर्द से वाकिफ है।

१) सामाजिक भूमिका :

कथाकार वाल्मीकी के कथा साहित्य में दलित चेतना की सामाजिक भूमिका का अहम स्थान है। सुवर्णो व्दारा इस समाज को युगो-युगों से दबोचा गया और ऊपर उठाने का मौका ही नहीं दिया। दलित जाति के लोगों का इस समाज में जीना, साँस लेना आज भी कठीन है, समाज में पन पी वर्ण-व्यवस्था का पर्दाफाश किया है।

जूठन उपन्यास में उच्च जाति के लोग नीच जाती के लोगों तत्कालीन समय में कीडे-मकोंडे की तरह समझते थे। गरीबी का भी चित्रण अधिक है। चारों तरफ, गंदगी, दुर्गंध , तंत्र गलियाँ इस माहौल में वर्ण-व्यवस्था को आदर्श व्यवथा

ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

कहनेवाले विव्दानों की सोच ही बदल जाएगी। कुत्ते- बिल्ली, गाय-भैंस को छुना बुरा नहीं था। लेकीन यदि चूहडे का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था। सामाजिक स्तर पर इंसानी दर्जा नहीं था।

जहाँ गुरूकुल में शिक्षा मिलती है वहाँ झाडू लगाने के लिए हेडमास्टर कहता है क्योंकि चूहड का बेटा होने के कारण। एक दिन पिताजी ने झाडू लगते समय देखा और अध्यापक से कहा- ये क्या कर रहे हो मुंशीजी ? पिताजी घूस्से में थे कहे -" कौन सा मास्टर है वो द्रोणाचार्य की औलाद जो मेरे लडके से झाडू लगवाये है ।" १२

शादी - ब्याह के मौकों पर, जब मेहमान या बाराती खाना खा रहे होते थे तो चूहडे दरवाजों के बाहर बडे-बडे टोकरे लेकर बैठे रहते थे। बाराती के खाना खा चुकने पर झूठी पत्तले उन टोकरों में डाल दी जाती थी, जिन्हे घर ले जाकर वे जूठन इकठ्ठी कर लेते थे। पूरी के टूकडे मिठाई देखकर हम खूश ही जाते थे। वही जूठन इकठ्ठी की हुई पूरियाँ को हम सुखाते थे क्योंकि आगे के ाकल में अपात्काल में वही काम आनेवाला था। परीक्षा के दिनों में प्यास लगने पर जिलास से पानी नहीं पी सकते थे। हथेलियों को जोडकर ओक से पानी पिना पडता था । पिलाने वाला चपरासी भी बहुत ुपर से पानी डालता था। कहीं गिलास हाथों से न छू जाए।

" उन दिनों गाँव में मरनेवाले पशुओं को उठाने का काम भी चूहडों के जिम्मे था । जिनके घर में जो काम करता था, उनके पशू भी उसे ही उठाने पडते थे। इसके बदले में कोई मजदूरी नहीं मिलती थी । गाय या भैंस या बैल को उठाने के लिए चार पाँच लोग लगते थे। इसलिए वह बार -बार बस्ती में आकर चिल्लाता था, देर होने पर गालियाँ बकता था। मरे हुए पशू को उठाना बहुत कठिन काम होता है। आगे और पिछे के पैरों को रस्सी से बाँधकर बाँस का मोठी- मोठी बाहियों से उठाना पडता है। उपर से गालियाँ खानी पडती। कितने क्रुर समाज में रहे हैं हम, जहाँ श्रम का कोई मोल ही नहीं बल्कि निर्धनता को बरकरार रखने का एक षड्यंत्र ही था वह सब।" १३

कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित समाज में एक नई चेतना भर देते है जिससे लोग शिक्षित होना चाहते हैं और सभी बुरे कार्यों का त्याग कर अच्छे कार्य करना- चाहते है। समाज के दलित वर्ग को जागरुक बनाते है अपने अधिकारों के प्रति व अपने कर्तव्यों के प्रति।

' सलाम ' कहानी संग्रह से दलित समाज के विभिन्न वर्गों का व समाज में दूसरों को नीव अर्थात गरीब व्यक्ति को दबोचकर दबाकर रखने की प्रवृत्ति, अनपढता के कारण गरीबों पर अमीरों की नौकरशाही, गरीबों की औरतों की आबरू लुटना और विरोध करने पर उन्हें दंडित करना या जान से मरवा देना तथा जाति के कारण उपजे विभिन्न अपवादों, झगडों का चित्रण किया है । ' सलाम ' कहानी का नायक कमल है चूहडों के बारात का चित्रण है । बैल की खाल मैं मानवतावादी चित्रण है। ' गोहत्या ' में दलित समाज के निर्दोष व्यक्तीपर किए जानेवाली ज्यादतियों, अत्याचारों का सकारात्मक यथार्थ है । ' ग्रहण ' कहानी से बाँझपन बनी महिला का चित्रण है । औरत को दोषी मानते है। यह स्त्री जातिपर किया गया अत्याचार है।

' अंधड' कहानी दलित समाजपर आधारीत है ।इसमें यह बताया गया है कि कोई दलित पड लिखकर ऑफसर बन जाता है तो अपनी संस्कृति, माता-पिता जात को भूल जाते है। उच्चवर्ग के साथ ताल - मेल रखते है। बाद में वह न दलित होना है न उच्च वर्ग का अंधड बन जाता है।

' जिनावर ' कहानी में भी स्त्रीजातीपर होनेवाले अन्याय अत्याचार का चित्रण है । ' अम्मा ' कहानी में ईमानदार बुढिया की कहानी है । खुद की रोजी-रोटी झाडू लगाकर कमाती है।

आर्थिक भूमिका : आर्थिक विपन्नता दलित होने का भरपूर संकेत है। दलित समाज का धन के अभाव में दलित होना प्रमुखतया माना जाता है। जिसके पास धन नहीं वह निर्धन है । एक तरफ दलित और दूसरी ओर निर्धन होने से तिरस्कार बढता रहता है। इसके कारण वे अच्छी शिक्षा नहीं पा सकते न अच्छा मकान । गंदे मैले पुराने फटे कपडे, झोपडी फूस की होती है।

ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

कथाकार का बचपन गरीबी में गुजरा, जिसका इन्होंने मार्मिक वर्णन सहज रूप से कलमबध्द किया है। उनकी आत्मकथा जूठन आर्थिक स्थिती की दुर्गति का अनूठा उदाहरण है।

' सलाम ' कहानी संग्रह में दलित समाज की गरीबी को बहुत मार्मिक रुप से प्रस्तुत किया है । पैसे कमाने के लिए दलित समाज के लोग सिर पर मैला तक होने का काम करते है। बैल की खाल में दोनों व्यक्ति ने खाल निकालकर मृत बैल की शहर में जाकर पैसे कमाते है। जिसके परिवार उन्हीं पैसोंसे घर चलाते है।

' कहाँ जाए सतीश ' कहानी का पात्र सतीश है जो दलित समाज का है । पिता नगरपालिका में सफाई कामगार है वह सतीश पढाई करता है। किसी फॅक्टरी में पार्टटाईम काम कर किताबे खरीदकर पढाई पूरी करता है। ' अम्मा ' कहानी में भी आर्थिक विपन्नता को उजागर किया है । सुबह से श्याम तक झाडू एवं पोछा मारकर पैसे घर लाती है वहीं पैसों पर अपना घर चलाती है। गरीबी और बुढापा भी है।

' खानाबदोरा ' कहानी दलित की आर्थिक भयावह पीडा को उजागर करती है । इटों के भट्टी पर काम करनेवाले मजदूरों का चित्रण इसमें चित्रित है। मानो और सुकिया यह दो पात्र है जो भट्टीपर काम करते है।

' घूसपैठिये ' इस कहानी में अनेक दलित संदर्भ आए है। दलित रिजर्वेशन के संबंधित यह कहानी है। छात्रों की आर्थिक तंगी के कारण मार-पीट अत्याचारों के शिकार छात्र बनते है। छात्रों के मनोबल को तोडा जाता है। कई बार छात्र उदास होकर आत्महत्या भी करते है।

' शवयात्रा ' कहानी में भी आर्थिक स्थिती का चित्रण करती है। कल्हर जाति के पडे लिखे लोगों को देखकर चमार जाति में जलन पैदा होती है।कल्लन नौकरी करने लगता है, मकान बनाया जाता है।

सामाजिक न्याय की भूमिका :

दलित साहित्य में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकी का प्रमुख स्थान रहा है। दलित साहित्य दलित समाज की पीडा का दर्पण है। इसी पीडा का चित्रण किया है। कथाकार दलितों को सामाजिक न्याय दिलाना चाहते है। आत्मकथा ' जूठन ' में अस्पृश्यता, गरीबी, उँच निचता, अदि कई कुटीतियों का विरोध किया है । दलितों से खेती , साफसफाई मजदूरी के सभी कार्य करवाये जाते थे और उसके बदले कम मजदूरी दी जाती थी। गालियाँ भी देते थे बडा है तो ओ चूहडे छोटा है तो ओ चूहडे के बेटे आदि । जूठन में अस्पृश्यता को उध्दत करते हुए लिखते है-

" अस्पृश्यता एक ऐसा माहौल कि कुत्ते-बिल्ली, गाय भैंस को छूना बुरा नहीं था लेकिन यदि चूहडे का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था सामाजिक स्तर पर इन्सानी दर्जा नहीं था। वे सिर्फ जरूरत की वस्तु थे । काम पूरा होते ही उपयोग खत्म। इस्तेमाल किया फेंक दो।"

कहानी संग्रह ' सलाम ' में भी दलित चेतना के सारोकार व न्याय की गुहार हमें देखने को मिलती है । कहानी 'गोहत्या ' में निर्दोष 'सुक्का' जो दलित व निर्धन है। जबरदस्ती गोहत्यारा बना दिया जाता है। ' गोहत्यारा ' में निर्दोष ' सुक्का ' जो दलित व निर्धन है। जबरदस्ती गोहत्यारा बना दिया जाता है। वह सरपंचों से न्याय की गुहार लगाता रहा, परंतु उसकी किसी ने नहीं सुनी । उससे बदला लिया जा रहा था जो सामाजिक अन्याय था ।

' मुंबई कांड ' कहानी में सामाजिक न्याय कि भावना को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है । मुख्यपात्र सुमेरनाथ है वह मुंबई में हुए दंगों, आगजनी व गोलीकांड से चिंतित है। दलित होने से अन्याय अत्याचार हुआ है। मुंबई के नामांतर प्रस्ताव के खिलाफ सामान्य वर्ग ने उत्पात मचा दिया था, इससे दलितों के घर जलाऐ गये निर्दोष जाने गई । इससे सुरेंद्रनाथ परेशान हो जाता है। देहराईन में जाकर गांधी की मूर्ति पर जुते का हार चढाने की कोशिष करता है । परंतु नहीं चढाता है।

मानवतावादी दृष्टिकोन :

कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकी पश्चिम उत्तर प्रदेश के एक दलित परिवार में पैदा हुए है जो जातिगत धरातल पर दलितों में भी अत्यंत निचले पायदान पर और बहुत पिछडा हुआ है, यह जाति है- भंगी या मेहतर। निहायत प्रतिकूल,

For Details visit our website – www.uniresearch.net.in

ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

ओमप्रकाश वाल्मीकी का साहित्य दिल को दहलानेवाला साहित्य है, जो पूँजीवाद समाजवाद व वर्ण व्यवस्था की पोल-खोल कर रख देता है। कथाकार ने अपने साहित्य में दलित समाज की दयनीय स्थिति को बेबाक होकर समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

आत्मकथा ' जूठन ' को पढकर तो मन उव्देलित हो उठता है। इसमें बचपन से लेकर जवानी तक का वृत्तांत चित्रित है। गरीबी घर की अधिक है, उच्च जाति के घर घर जाकर काम करना, विवाह शादी में बची हुई मीठाई पूरीयाँ खाना इसे इकट्ठाकर घर लाना, उसे सुखाना और खाना । यह कैसी नंगी निर्धनता है। यह हमें सोचने के लिए मजबूर करती है। रहने के लिए कच्चे मिट्टी के मकान जो बरसात के दिन अपने आप टूट जाती है। शादी-विवाह पर तगाओं के घर के बाहर चावल से निकलनेवाली माँड के लिए खडे रहना, माँड का ज्यादा मात्रा में मिल जानेपर सभी बच्चे बुढे खुश हो जाते थे। अगर दलित कोई अपनी अस्मिता को लेकर आवाज उठाता है तो उसपर आरोप लगा दिया जाता है । उच्च वर्गीय लोग- दलित वर्ग के लोगों की इज्जत न करके बच्चे बुढों सभी को जाति के नाम से पुकारते है। अध्यापक वर्ग स्कूल में दलित छात्रों के साथ घिनौनी हरकते करते है। पढाई से ज्यादा झाडू लगाने के लिए कहते थे।

दलित समाज के लोग देवी-देवताओं, भूत- प्रेतों में ज्यादा विश्वास रखते है और देवता के नामपर माँस और मदिरा का संवेन किया जाता है। जादूटोना रुढी परंपरा अंधश्रध्दा अधिक थी। उत्तरांचल में देहरादून में मेले पर भैंसे की बलि जिससे कथाकार सिहर उठता है। कथाकार ने पशुबली का विरोध किया है। दलित वर्ग चूहडा व्दारा माई मरादन की पूजा, हल्वा पूरी या असूर सुअर के माँस का भोग लगाया जाना प्रमुख रूप से चित्रित किया है। सांप्रदायिकता का विरोध करके कथाकार अधिनायकतावाद के खिलाफ भी आवाज उठाई है। उनके कथा साहित्य में घृणित स्वरूप के प्रति विद्रोह प्रमुखता में उद्धृत है। कथाकार ने मानवतावादी दृष्टिकोन को भी प्रमुखता दी है तभी कथाकार किसी भी अप्रिय घटना से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

संदर्भ ग्रंथ

१. श्योराज सिंह बेचैन, युध्दस्तआदमी अंक १९९८ पृ १४
२. कंवल भारती - दलित साहित्य, चिंतन के विविध आयाम पृ ९१
३. बाबूराव बागुल - सिंह गर्जना दिवाळी अंक १९७५
४. प्रेमकुमार मणि - दलित साहित्य एक परिचय ' वर्तमान साहित्य ' मासिक
५. दयानंद बरोही - पश्यन्ती त्रैमासिक १९८८
६. प्रेमाशंकर - प्रशासन त्रैमासिक १९९७
७. डॉ. एन.सिंह - सुमनलिपि १९९३ मासिक
८. माता प्रसाद- दलित साहित्य पृ३
९. ओमप्रकाश वाल्मीकी - दलित साहित्य और सामाजिक संदर्भ लेख
१०. डॉ. सत्यप्रेमी- दलित साहित्य शिखर की ओर- पृ २१५
११. डॉ. श्यौराज सिंह चौहोन - युध्दरत आदमी अंक १९९८
१२. जूठन - ओमप्रकाश वाल्मीकी पृ-१५
१३. वही - पृ २०

I N T E R N A T I O N A L R E S E A R C H F E L L O W S A S S O C I A T I O N

KOLAD

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2018 Special Issue – 69

Chief Editor : Dr. Dhanraj Dhangar
Assist. Professor,
Dept. of Marathi,
MGV's Arts and Commerce College, Yeola
Dist. Nashik (M.S.) India.

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Indian Citation Index (ICI)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October- 2018

SPECIAL ISSUE-69

KOLAD

Chief Editor : Dr. Dhanraj Dhangar
Assist. Professor,
Dept. of Marathi,
MGV's Arts and Commerce College, Yeola
Dist. Nashik (M.S.) India.

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 450/-

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 69 : Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- **Mr.Tufail Ahmed Shaikh**- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
- **Prof. Vinay Madgaonkar** - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- **Dr. G. Haresh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- **Dr. Samjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.]
- **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.]
- **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.]
- **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.]
- **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.]
- **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.]

Advisory Board -

- **Dr. Marianna kosic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions,Coimbatore
- **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- **Dr. B. V. Game** - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- **Dr. J. S. More** – BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopargaon
- **Dr. S. B. Bhambar**, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- **Dr. Uttam V. Nile** - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- **Dr. K.T. Khairnar**– BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- **Dr. Vandana Chaudhari** KCE's College of Education, Jalgaon
- **Dr. Sayyed Zakir Ali** , HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- **Dr. Sanjay Dhondare** – Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- **Dr. Amol Kategaonkar** – M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by –

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

48	नवपत्रकारिता	मनीषा मोहोड	255
49	पुराण साहित्य : उत्पत्ती, स्वरूप, अंतरंग	डॉ. संतोष चतुर	258
50	भारतातील राष्ट्रवादाचा इतिहास	डॉ. डी.एम. चौधरी	265
51	कीर्तन : एक संवादात्मक नाट्यप्रयोग	डॉ. सतीश चव्हांदे व प्रा. काशिनाथ तरासे	268
52	अधिकोषण व्यवस्थेतील तंत्रज्ञानाच्या बदलांचा अभ्यास	पंकज तायडे	276
53	१९८० नंतरच्या ग्रामीण साहित्याच्या भाषेचे बदलते स्वरूप	डॉ. रामकिशन दहिफळे	281
54	संत साहित्यातील मूल्यविचार	डॉ.अशोक लिंबेकर	284
55	आदर्श ग्राम संकल्पना	डॉ. प्रवीण कारंजकर	289
56	पुणे जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेचे सामाजिक योगदान	प्रकाश पांढरमिसे	292
57	शोकात्म आविष्कारांची संवेदनशील कलाकृती : हाल्या हाल्या दुधू दे	कु.प्रतिभा झळके	296
58	नेतृत्व आणि त्याचे घटक	डॉ. सुनील चकदे	300
59	पुणे जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक-महिला बचत गटाची अर्थवाहिनी	प्रकाश पांढरमिसे	304
60	महाराजा सयाजीराव यांचे वैचारिक साहित्य : एक अभ्यास	डॉ. अनिल गर्जे	309
61	१९६७ची सार्वत्रिक निवडणूक : एक ऐतिहासिक विश्लेषण	प्रा. एकनाथ खरात	314
62	झुंज : एक जीवनसंघर्ष	प्रा. लालबा दुमटकर	319
63	पुणे विद्यापीठाशी सलग्न महाविद्यालयीन युवकांची आरोग्याधिष्ठीत शारीरिक सुदृढता व निरामयता स्तराचा चिकित्सक अभ्यास व मानांकन निर्मिती	सुनील पानसरे व डॉ. विनायक तुजारे	323
64	उच्च शिक्षण संस्थांमध्ये विशेष गरजा असणाऱ्या विद्यार्थ्यांसाठी राबविले जाणारे उपक्रम (रेणुका कॉलेज ग्रंथालयाच्या संदर्भात)	डॉ. रमणिक लेनगुरे	331
65	संत एकनाथ व त्यांची भारुडे	डॉ. व्यंकटेश पोटफोडे	337
66	रोहा तालुक्यातील कुणबी समाजाचे लोकजीवन	डॉ. शंकर मुंढे	342
67	भारतीय राज्यघटना व पर्यावरण शिक्षण	डॉ. मोहन खताळ	348
68	सातवाहन कालीन बौद्ध लेणी : स्त्रियांचे योगदान	डॉ. माधवी खरात	351
69	प्रिया तेंडुलकरच्या कथांमधून व्यक्त होणारी चिंतनशीलता	डॉ. वैशाली शोखे	356
70	आदिवासी लोकगीतांमधील आदिबंध	डॉ. अंजली मस्करेन्हस	358
71	शैक्षणिक संशोधनात माहिती तंत्रज्ञानाच्या साधनांचा शिक्षकांना होणारा विविधांगी उपयोग	डॉ. पूर्णिमा वानखेडे	366
72	धुळे तालुक्यातील कापडणे गावातील आरोग्य केंद्रात काम करणाऱ्या आरोग्य सेविकांच्या समस्यांचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. अरविंद पाटील	372
73	कथाकार उद्धव शेळके यांच्या स्वातंत्र्योत्तर ग्रामीण कथा	डॉ. जितेंद्र गिरासे	377

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 69 : Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

रोहा तालूक्यातील कुणबी समाजाचे लोकजीवन

डॉ. शंकर शिवाजी मुंडे
डॉ. श्री. नानासाहेब धर्माधिकारी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय
गोवे-कोलाड. ता. रोहा, जि. रायगड.
मो. नं. ७७२१९६१११७,
मेल आय. डी. - shankarmunde40@gmail.com

प्रस्तावना :-

रायगड जिल्यातील रोहा तालूक्यातील कुणबी समाज हा मोठ्या प्रमाणात वास्तव करून रहाते कारण या येथील कुणबी समाजाचा इतिहास पाहिला तर चार हजार वर्षापासून ही कुणबी लोक रोहा तालूक्यात अस्तीत्वात असलेले पहावयास मिळते. कारण छत्रपती शिवाजी महाराजाच्या राज्यकारभारात कुणबी समाजाचे मोठे अस्तित्व असलेले पहावयास मिळते.

ब्राम्हण क्षत्रीय वैश्य व शुद्र या वर्ण व्यावमध्ये विचार करता कुणबी समाजला नेहमी तुच्छ लेखलेले पहावयास मिळते कारण ब-याच ठिकाणी कुणबी शब्दाचे वेगवेगळे अर्थ सांगण्यास अलेले पहावयास मिळते व कुणबी शब्द हा अपमाणीत द्रषटया वापरताना सुध्दा दिसतो जसे राज्यभिषक नाकारणे शुद्र संमजने धर्मशास्त्र पंडित पण नाकारने किंवा कुणबी हे शुद्र मग धुपाल राजा कसे मनाव व त्याचे मुंज नाकारणे इ. आनेक प्रकाराने कुणबी समाजाची मनूवादी लोकांनी सतत अवेल्हना केलेली दिसून येते.

कुणबी म्हनजे शेती मध्ये कामकरणारी शुद्र जात कुणबी म्हणजे अतिशय वाकडा व कुटील माणूस कुणब्याला कीतीही सुधारणा केली तरी दृपापणा व श्रष कायम रहातो येवडेच काय मुंबई येथून प्रकाशीत होणारा दै. लोकस्ता दि ८.०३.२००० च्या अंकात कुणबी शब्दाचा अर्थ दासी व मोलकरण असे आहे. रोहा तालूक्यातील कुणबी समाज मोठया प्रमाणात वास्तव करून राहत असला तरी आपल्याला मिळणारी करपूजा आर्थिक व्यावसायात कमालीचा समाधानी व संतुष्ट असलेला दिसतो. आपला जिवन प्रगतिकडे कसे जाईल या अणुशंगाने आता कुणबी समाजात वाटचाल करत असलेला पहावयास मिळतो आहे म्हणून रायगड मधील रोहा तालूक्यातील कुणबी समाजाचे एक वेगळेच वैशिष्ट्याने नटलेला समाज म्हणून पाहता येतो.

महाराष्ट्रातील कुणबी समाज:-

महाराष्ट्रात असलेल्या कुणबी समाजामध्ये कोकण कुणबी समाजामध्ये कोकणी कुणबी मराठा कुणबी खानदेशी कुणबी तिरळे कुणबी,कोळी कुणबी,वाढेकर कुणबी खेरे कुणबी, धनोजे कुणबी, जाधव कुणबी, दखने कुणबी, बावणे, कुणबी लाडोणे कुणबी, खेडुले कुणबी,झाडे कुणबी, पेरके कुणबी,वंजारी कुणबी, घोटाळे कुणबी,कुमार कुणबी पाजने कुणबी मदराज कुणबी तलहेरी कुणबी तिडोळी कुणबी कोळी कुणबी सोनकोळी कुणबी इतक्या पोटजाती आढळल्या असुन ह्याशिवाय काही पोटजाती असण्यची शक्यता आहे कारण मराठा कुणब्यामध्ये शहान्नव कुळी म्हणुन जो उल्लेख होतो ते कुळ शोधण्याचा प्रयत्न केला तर पोटजातीत अधिक भर पडू शकतो

कोकणामध्ये काळी कुणबी आधीक संख्येने असून अलिकडच्या काळात फक्त कूणबी अशी संज्ञा वापरतात तर काही कोळी अशी संज्ञा वापरतात व्यावसायिक द्रष्टया विचार केला तर असे आढळले की मत्स्य

ISSN : 2348-7143
October-2018

बिजाची शेती करणारा (मासळयांची शेती)कूणबी समाज कालातंराने कोळी व कूणबी म्हणून ओळखला जाऊ लागला कोळी आणि कूणबी ह्या दोन्ही समाज समूहातील वंश गोत्र आणि दैवत परस्परांशी जूळते मिळते असेच आहे. कोकणातील कुणबी समाजाची स्थिती आर्थिक सामाजिक द्रष्टया अंत्यत मागासलेली आहे.

संपुर्ण कुणबी समाजाचे कुलचिन्ह कूलगोत्र कूलदैवत बहूतांशरित्या एकच आहे. कुणबी समाज मुलत: शंकराचा उपासक व पार्वतीच्या अनेक रूपापैकी कोणत्या तरी एका रूपाचा उपासक आहे. तुळजापूरची भवानी ही पार्वतीचे रूप असून भवानी कुलदैवत असणा-या कुणब्याची संख्या फार मोठी आहे. कुणब्या मध्ये आढळून येनारे कुलचिंन्ह हे शंकराशी संबंधीत आहे. नाग त्रिशुल, डमरू, पिंड, नंदी, अशा प्रकारची कुल चिंन्हे आढळत असून बहूताशी कुनबी समाज शंकराचा उपासक असल्याचे दिसून येते.

कुणबी समाजाचा निवास :-

रायगड जिल्यातील रोहा तालूक्यातील कुणबी समाज हा हाजारो वर्षापासून वास्तव करून रहातो त्यामुले त्याचे रूढी परंपरा संस्कृती निवासाची रहाण्याची पध्दत बोलण्याची लकब हे इतर समाजप्रथा वेगळया दृष्टीकोणातून येत असलेले पहावयास मिळते.

रोहा तालूक्यातील कुणबी समाज हा इतर समाजापेक्षा अधिकृत होताना दिसतात कारण म्हणजे त्याचे घरे व्यावसाय व त्याचे जिवनमान यामुळे ते वेगळे ठरतात कुणबी समाज हा रोहा तालूक्यात वाडी गाव व शेतीमध्ये वास्तव्या करून राहतांना पहावयास मिळतो. आणि त्याचे घराचे वैशिष्ट हे सुध्दा वेगळे असलेले पहावयास मिळते.

कौलारू घर :-

रोहा तालूक्यात सर्वात जास्त कुणबी समाज वास्तव्य करून राहताना पहावयास मिळतो सर्वात जास्त कुणबी समाज गावामध्ये वास्तव्य करून राहतो. त्याचे घर मूळ कौलारू रहातात. कुणबी समाजातील गावातील कौलारू घरे हे सर्वसाधरणत: मांडीचे घर असतात विरू मातीचे बाधकाम असते तर कधी पाढ-या रंगाच्या मातीचे बाधकाम असते घराची उंची सर्वसाधारण सहा १०-१२ फूट उंच असते त्यावर सागाच्या पाटया टाकून माडी बनवीले जाते त्यावर पाच ते सहा फूट उंच भिंती बाधकाम करून सागाच्या लाकडाने सांगाडा बनवले जाते त्यावर आडवे उभे पातळ लाकडी पाटया बसवून एका विशीष्ट रांगेने पसरट कौलारू खापरे पसरवली जातात. डिळच्या मध्यभागी आडयाला त्रिकोणी आकाराचे कौल टाकतात व घरच्या चारही कोणामध्ये गोल आकाराचे कौल टाकून घराची झाकणी बनवतात. त्याला आपण कौलारू छत असे म्हणतो.

घरच्या आतल्या बाजूने विसिष्ट ठिकाणी घराला आधार देण्यासाठी डिळला उपयोग करतात एक घराला मोठा दरवाजा बसविला जातो आतमध्ये जसे खोली असतील तसे दरवाजे बसवितात सोइ नुसार लहान मोठी आकाराची खिडक्या घराला बसवलेली असतात घरच्या हरानी भागावर शुभ-लाभ श्रध्दा सबूरी राम सिता अशा प्रकारचे श्लोक लिखान केलेले असते. घरच्या डाव्या व उजव्या बजूला सागाची लाकडे लावून पडवी काडतात या पडवी मध्ये लाकूड फाटा ठेवतात तर काही कुणबी समाज पडवीमध्ये स्वयपाक घर बनवितात घरच्या दुस-या पडवित गुरे डोराचे गोठा बनवितात किंवा शेती संदर्भात लागनारे आवजारे ठेवीत असतात घरच्या समोरच्या बाजूस पडविच्या बाजूला स्नान गृह व स्वच्छता गृह बाधलेले असते. स्वच्छता घर कुणबी समाज घरा बाहेर

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 69 : Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

बांधलेले बगायला मिळतात स्वच्छता घराच्या बाजूला एक चुल असते त्यावर अंगोळीसाठी पाणी तापविण्याचे काम करीत असतात अशा प्रकारे गावातिल कुणबी समाजाचे घराचा आकार असतो.

शेतीतील कौलारू घरे :-

रोहा तालूक्यातील नागोठणे तांबडी परिसरातील काही कुणबी समाज शेती मध्येच घरे बांधून रहातात आपल्या असना-या भात शेतीमध्ये शेतीच्या कोप-यावर एक छोटेसे घर बांधकाम करून रहातात घर कधी कौलारू तर पत्रे टाकलेली असतात घरापर्यंत जाण्यासाठी शेतीच्या बांधावरच्या पाऊल वाटेचा उपयोग करत असतात. या घरच्या पाठीमागे स्वयपाक घर व स्नानगृह बाधलेली असते घरच्या समोर पत्रे व रिकामी जागा असते घरच्या पाठीमागे काही भाजीपाला लावलेला असतो तर कधी विविध फळाची झाडे लावलेली असते. उदा. नारळ, फणस, चिकु, डाळिंब सुपारी इ. अनेक फळाची झाडे लावलेली असतात आणि घरच्या आजुबाजूला भेंडी, कार्ली, दूधीभोपळा इ. अनेक भाजीपाला घेत असतात. ही घरे बांधताच वेळी वरामध्ये सारवलेली असतात त्यामूळे पावसचा दिवसात ते ओलाविली असतात तरी ते लोक आपले जीवन आनंदाने जगताना दिसतात.

वाडीतील पत्राची घरे :-

सध्या काही कुणबी समाज विट सिमेंटच्या साहयाने पत्राची घरे बांधताना दिसतात सर्वसाधारणत: जमिनीतून दगडाचा पाया भरतात (जोता) त्यावर विट सिमंटचे बांधकाम करतात आणि घरावर पत्रे टाकतात आपल्याकडे असलेल्या पैस्यानुसार कधीलादी तर कधी सारवलेली ठेवित असतात घराच्या समोर थोडीसी जागा ठेवतात बसण्यासाठी किंवा साहित्य ठेवण्यासाठी सर्वसाधारणत: या घरामध्ये स्नानगृह व स्वयपाकगृह पाठीमागेच बाधलेली दिसतात घरांची उंची १०-१२ फूटापर्यंत असते कधी कधी उनाळयाच्या दिवसात घरावरती तंसाची पेंडी टाकून घर थंड ठेवतात तर पावसच्या दिवसात घरावर ताटपत्री टाकून घर थंड ठेवतात.

पक्की बाधकाम घरे :-

रोहा तालूक्यातुन गेली २५ वर्षापासून मिल M.I.D.C आल्यामूळे येथील लोक आर्थिक सदन झालेली दिसतात त्यामुळे बरेच कुणबी समाजातील लोक कंपनी क्षेत्रात कामगार म्हणून काम करीत आहे त्या लोकांनी पक्की विट सिमेटची घरे बाधताना दिसतात सर्व साधारण आपला आर्थिक सोया नुसार हे लोक घर बांधतात घर बांधून झाले की घराच्या छताच्या संरक्षणासाठी घरावर पत्रे घालतात घरामध्येच स्नानगृह व स्वच्छतागरह बाधतात घरासमोर गाडी ठेवण्याकरीता जागा ठेवीत असे घराच्या आत मध्ये चांगल्या प्रतिची लादी बसवलेली असते. घराच्या चारही बाजूने संरक्षण भिंत बाधतात घराच्या समोर गेट बसविले जाते अशा प्रकारचे विट सिमेंटचे मजबूतीची सध्या कुणबी समाज घर बांधताना दिसतात रोहा शहरात सध्या फलॅट संस्कृती आली आहे पण त्यामध्ये सध्या नौकरदार वर्ग मोठया प्रमाने घर घेतअसताना पहावयास मिळतो पण अजून पर्यत कुणबी समाज फलॅट संस्कृतीचा आधिन झालेला दिसत नाही.

वेळूच्या बाबूची घरे :-

रोहा तालुक्यातील काही ग्रामीन भागामध्ये वेळूच्या बाबूपासुन घरे बनवलेली दिसतात पाथरसेत सुतारवाडी तांबडी विरजोती हया भागात वेळूच्या बांबुपासुन आपल्या घराच्या भिंती बनवितात वेळूचे बांबु एका

विशीष्ट पध्दतीने एका रांगेत तापवुन त्याची बांधनी केली जाते व त्यावर लालमातीचा लेप लावून सारवून घेतले जाते घरात सुध्दा लालमातीची भर टाकून त्यावर शेनाने सारवले जाते घराच्या पाटापासून बनवलेला दरवाजा लावलेला असतो तर छत हे सागाचा ताकडाचा उपयोग करून घरावर खापरी कौल टाकले जाते अशी या घराची रचना असते या घरामध्ये चूल व बसण्यासाठी व झोपण्यासाठी असे वेगवेगळया खोल्या नसतात तर एक सर्वच एकच खोलीचे घर असते.

कुणबी समाजाचा व्यावसाय :-

रोहा तालूक्यातील कुणबी समाज हा वेगवेगळया जातीच्या नावाने ओळखला जातो ,तल्हेरी कुणबी तिलोरी कुणबी काळे कुणबी वणी कुणबी कराडी कुणबी अस्या विविध पोटजातीने त्यांना ओळखले जाते इतकेच काय वेगवेगळया राज्यामध्ये कुणबी समाजाला वेगवेगळया नावने ओळखले जाते.हा कुणबी समाज रोहा तालूक्यात त्यांना पारेदार असे सुध्दा संबोधले जाते म्हाणजेच शेती करणारे लोक असा अर्थ घेताना दिसून येतो कोकणातील कुणबी समाज हा कुलवाडी म्हणून ओळखला जातो कोकणामधील बेदखल कुल वहिवदार कुणबी समाजातील संख्या जास्त आहे कोकणामधील कुणबी समाज अल्पभुदारक असलेला दिसून येतो.५ गुंटे पासुन ते ५ ऐकरच्या वरती शेती या लोकांना नसते त्याच तटपुंज्या शेती मध्ये आपले आर्थिक तरतुद करतात या शेतीमध्ये आर्थिक गुजारण होत नसल्यामुळे हे कुणबी समाज वेगवेगळया व्यावसायाकडे वळलेले पहावयास मिळते.

शेती व्यावसाय :-

कुणबी समाजाचा पिढीजात व प्रमुख व्यावसाय शेती या व्यावसायाकडे पाहिला जातो रोहा तालुक्यातील कुणबी समाज हा पारंपरिक पध्दतीने आपला शेती व्यावसाय करतो पावसाच्या दिवसात भात हा मुख्य शेत पीक तो घेतो आणि भात काढून झाल्यानंतर त्याशेतीमध्ये टोबा पध्दतीने वाल मटकी चवळी असे तो छोटे मोटे पिके घेत असतो याच बरोबर तो शेताच्या बांध्यावरती तुर भेडी मिरची वांगी इ.पिक फळभाज्याची लागवड करतो हा कुणबी समाज अत्यंत सर्वसाधारण दर्जाचे भात पिकवतो व्यावसायीकदृष्टया तो शेती करत नसून आपल्या घरच्यांना पुरेल एवढेच शेती करताना दिसतो कुणबी समाजाचा शेती हा व्यावसाय पारंपारिक असला तरी आता शेती परवडणारी राहिली नसल्यामूळे इतर व्यावसायाकडे वळताना दिसतो.

फळ उत्पादन :-

रोहा तालूक्यातील कुणबी समाज हा आपल्या शेतीमध्ये नारळ फणस चिकू काजू सुपारी पफई यासरखी फळ झाडे तो लावतो व त्यातून उत्पन्न काढून आपली उपजीवीका भागवित असतो तर हिवाळयाच्या दिवसामध्ये चनेरा कोलाड बइतवाडी इ. अनेक परिसरात कलिंगड या फळाची लागवड करून शेती करीत असतात.कुणबी सममाज हा आपल्या घराच्या पाटीमागे शेतीमध्ये शेतीच्या बांधावर व कधी कधी २०-२० गुंठया मध्ये फळांची लागवड करून आपला व्यावसाय करताना दिसतो.

पशू पालन :-

रोहा तालुक्यातील कुणबी समाज शेतीला जोडव्यावसाय म्हणून पशुपालन करीत असताना दिसतो त्यामध्ये पोल्ट्री फार्म शेळीपालन गुरेपालन म्हशीपालन इ.सारखे अनेक पशू पालन करताना दिसतो कारण या

व्यावसायातून त्यांना नगद पैसा उपलब्द होत असल्यामुळे या व्यावसायाकडे तरून पिडी मोठया प्रमाणात वळताना दिसते म्हणून रोहा तालुक्यात ब-याच ठीकाणी असे पशूपालन करणारे लोक पहावयास मिळतात.

भाजीपाला लागवड व्यवसाय :-

रोहा तालूक्यात डोलव्हड धरणाची व्यवस्था झाल्यामुळे पाणीसाठा मुबलक प्रमाणात उपलब्ध झाला. त्यामुळे कुणबी समाज आधुनिक शेतीकडे वळला या धरणाच्या पाण्याचा उपयोग करून काकडी, कारली, चिबुड, शिराळी भोपळा, दुधी भोपळा, मुळा, पालक ,कोथिंबीर, टोमॅटो इ.प्रकारचे व्यावसाय सध्या कोलाड नागोठने, सुतारवाडी, धाटाव, अशोक नगर परिसरामध्ये भाजीपाला मोठया प्रमाणात घेत असतात.

विट भट्टी व्यवसाय :-

रोहा तालुक्यातील सदन असनारा शेतकरी आपल्या शेती मध्ये भात पिक काढून झाल्यानंतर त्या शेतीमध्ये विट भट्टी व्यवसाय करीत असतानां दिसतो आजूबाजुच्या विविध टेकडयांची माती उपलब्ध करून रोहा येथील सानेगाव जे.टी वरून दगडी कोळसा आणून आदिवासी कामगारांच्या साहयाने विट भट्टी चालवीत असतात. हा व्यवसाय सर्व साधारणत: ऑक्टबर महिण्यापासून ते मे महिण्याच्या शेवट पर्यंत कुणबी समाज हा विट भट्टी व्यवसाय करीत असतो त्यातूनच कुणबी समाज आधिक आधिक सदन दिसतो.

मजूरी :-

रोहा तालूक्यातील कुणबी समाजाचे लोक मजूरी करताना आढळून येतात हे लोक घर वांधणी, विट भट्टी शेती, अशा पध्दतीच्या व्यावसायावर मजूरी करताना दिसतात आपली उपजिवीका भागवत असतात या मजूरी मुळे त्यांना जसे काम असेल तसा पैसा मिळतो. त्यामुळे हे लोक त्यांना जे काम मिळेल ते करत . हे लोक आर्थिक द्रष्टया कमकुवत असतात.

कुणबी समाजाचा शैक्षणिक दृष्टीकोण :-

महाराष्ट्रातील कोकण विभागामध्ये ठाणे, रायगड, रत्नागीरी ,सिंधदूर्ग या चार जिल्हया मध्ये कुणबी समाज आजही शैक्षणिक दृष्टी मागासलेला दिसून येतो कारण त्यांच्या मुख्य व्यावसाय शेती असल्यामुळे जास्तीत जास्त वाडी डोंगराळ भागामध्येच वस्ती करून राहताना दिसता. त्यामुळे त्यांची शैक्षणिक दृष्टया प्रगती मागासलेली दिसते कुणबी समाज ब-याच अंशी भुमिहीन असल्यामुळे किंवा अल्पभुधारक असल्यामुळे कुणबी समाजातील मुले लहान पणापासुन वेगवेगळे काम व व्यावसाय करण्यासाठी सुरवात करतात. रोहा तालूक्यातील कुणबी समाजाचे असेच वास्तव असलेले दिसुन येते मुलगा ८,९ वर्षाचा झाला की हॉटेल कामगार गवंडी कामगार गुरे राखणे शेळया चारणे, पडेल ती शेतीचे कामे करने या सोबत विविध फळे जमा करून विकणे अशा प्रकारचे काम करीत असल्यामूळे शैक्षणीक मागासलेपण आलेले दिसुन येते.

गावामध्ये चौथीपर्यत किंवा सातवी पर्यत शाळा असल्यामुळे पुढील शिक्षणासाठी त्यांना १० कि.मी पायी चालत जावे लागते त्यामूळे त्याच्या जीवनात शैक्षणिक दृष्टीकोण संदर्भात उदासिनता निर्माण झालेली दिसून येते काही मुले १० वी १२ वी पर्यत शिक्षण घेतात व पुढे ते शिक्षण घेत नाहीत आपले घर चालविण्याकरता मुंबई ला कामाला जातात. दुकानात कामगार, हॉटेल मध्ये वेटर, ऑफीस मध्ये शिपाई ,वॉचमन, फळांच्या दुकानात, मॉलमध्ये इ. ठिकाणी ते कामे करून जीवन जगत असतात कुणबी समाज हा अल्पभुधारक असल्यामूळे आपल्या

Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

November-2018 Special Issue – LXXIII

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

27	Role of Lonely Mothers in the Works of Jhumpalahiri Asst. Prof. Sanober Kahkeshan	145
28	Institutional Repositories Across the World: A Case Study of Open DOAR (JISC) **Mr. Nikhil Patil & Dr. Chandrashekhar Wani**	151
29	Spatial Distribution and Growth of Tribal Population in Chopda, Yawal and Raver Tehsils **Kishor Nehete**	158
	हिंदी विभाग	
30	श्रीमद्भगवद्गीता की अद्वैतपरक भाष्य- एक शोधपरक दृष्टी **निशा**	164
31	'अक्षयवट': वर्तमान महानगरो का सच **डॉ.सन्मुख मुच्छटे**	170
32	मोहन राकेश के साहित्य में मनोविज्ञान : एक अध्ययन **प्रा. सूर्यकांत आमलपुरे**	173
33	हिंदी सिनेमा और हाशिए का समाज **डॉ.राजश्री तावरे**	176
34	समान शीर्षकवाली कृतियो का परिचय **सचिन कुमावत**	179
35	जनसंचार के माध्यमो में प्रयुक्त हिंदी **डॉ. भीमराव मानकरे**	183
36	रघुवीर सहाय का गद्य साहित्य **डॉ. प्रमोद पडवळ**	186
37	हिंदी व्यंग्य परंपरा में शंकर पुणतांबेकर का योगदान **डॉ. बळीराम राख**	192
38	भूमंडलीकरण युग में अनुवाद की आवश्यकता **प्रा. विवेकानंद चव्हाण**	195
39	मध्यप्रदेश में औद्योगिक निवेश की संभावनाएँ – एक अध्ययन **प्रो. डॉ. सुहास धांडे**	199
40	उत्तर छायावाद के उपेक्षित कवि श्री रामगोपाल शर्मा 'रुद्र' की काव्य रचना के विविध आयाम : एक अध्ययन **डॉ. विजयप्रकाश शर्मा**	206
41	भारतीय भाषा परिवार और हिंदी **डॉ.अर्जुन पवार**	213
42	आदिवासी संस्कृती **डॉ. प्रवीण कांबळे**	218
43	भारत के अन्य भाषओ में लिपि देवनागरी की आवश्यकता **डॉ. विलास कांबळे**	220
44	बाजारवाद और हिंदी **डॉ.संगीता जगताप**	225
45	रघुवीर सहाय की कविता में लोकतंत्र **अक्षय भोसले**	228
46	नागार्जुन की कविता 'प्रेत का बयान': भाषिक संरचना **डॉ. गीता दोड्मणी**	232
47	'उधर के लोग' दलित उपन्यास में स्त्री सशक्तीकरण **डॉ. सुचिता गायकवाड**	238
48	डॉ. गिरीराज शरण अग्रवाल कि गजलों में सामाजिक चिंतन **डॉ. अमोल दंडवते**	244
49	अंतरराष्ट्रीय दार्शनिक, भारतीय साहित्यिक एवं समर्पित समाजसेवी श्रीमान प्रताप सेठजी **डॉ. शशिकांत सोनवणे**	249
50	महिला रचानाकारों कि कहानियों में जीवन मूल्य **डॉ. संतोष आडे**	257
51	लोकगीत और बंजारा समाज **डॉ.एम. के.राऊत**	264
	मराठी विभाग	
52	संजय पवार यांच्या एकांकिका :एक दृष्टीक्षेप **डॉ. माणिक बागले**	266
53	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि स्वराज्य **आबासाहेब कसबे**	272
54	डेमोफून :मानवी मूल्य संवर्धन व संगोपानार्थ लढणारा मुशाफर **प्रा.अरविंद बा.पाटील**	277
55	'अरे संसार संसार' या महानगरीय कादंबरीतील मध्यमवर्गीय संवेदना **डॉ. वाल्मिक आढावे**	282
56	प्रकाश संत एक अष्टपैलू व्यक्तिमत्व **डॉ. उज्वला देवरे व प्रा.सुनील खैरनार**	287
57	अण्णा भाऊ साठे यांच्या कथेतील आंबेडकरवादी जाणीवा **डॉ.राजेश्वर दुडूकनाळे**	297

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 73 :
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
November-2018

"मोहन राकेश के साहित्य में मनोविज्ञानः एक अध्ययन"

प्रा. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
हिंदी विभाग प्रमुख
डॉ.नानासाहेब धर्माधिकारी महाविद्यालय कोलाड
ता. रोहा जि. रायगड
पिन–४०२३०४
मो.न.– ९४२१४५१७०३
Email id:- sureshamalpure@gmail.com

प्रस्तावना:–

साहित्य का संबंध मानव मन से प्रगाढ रुप में है अंत: साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्र चित्रण पर आधुनिक मनोविज्ञान एवं मनो विश्लेषनवाद का प्रभाव प्रमुख रुप में परिलक्षित होता है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। और साहित्यकार मानव व्यवहार का विश्लेषण करता है। पाश्चात्य कारों में फ्रायडय़ एडलर एवं युग के सिध्दातोंका उपयोग अपने पात्रों के चरित्रांकन में किया है। हिंदी के कुछ उपन्यासकारों में अज्ञेय जैनेंद्र एवं जोशी ने ऐसे पात्रों की सृजना की जो फ्रायडय़ युंग एवं एडलर के सिंध्दांतो से परिचालित है। इन चरित्रोंको समझने के लिए हमें फ्रायडय़ युंग और एडलर के सिंध्दातों को मूलता समज लेना चाहिए। हिंदी साहित्य इतिहास में रामचंद्र शुक्लाजी लिखते है–"फ्रायड ने अचेतन मन और काम भावना को मनोविश्लेशण में प्रमुख स्थान दिया। फ्रायड काम भावना को मानव मन की मूल परिचालिका शक्ति मानता है। उसके अनुसार धर्म अर्थ साहित्यऔर संस्कृति की मूल प्रेरणा यही काम वृत्ति है।–(१)

आधुनिक युग के सशक्त हस्ताक्षर एव प्रसिध्द नाटककारय़ उपन्यासकार तथा कहानीकार के रुप में हिंदी साहित्य में प्रसिध्द मोहन राकेश जी माने जाते है। उनके साहित्य में तो मनोविज्ञान भरा पडा हैं। उनकी कहानीयॉय़ उपन्यास और नाटक किसी सामाजिक परिस्थिति को लेकर नहीं लिखे गये बल्की स्त्रि–पुरुष के संबंधो को लेकर उन्होने साहित्य लिखा। उनके अपने जीवन में भी दाम्पत्य जीवन को लेकर कई समस्याएँ थी। इसी लिए उन्होंने अपने साहित्य को अपने ही जीवन से प्रेरित होकर लिखा है।

उनकी प्रसिंध्द कहानी 'क्वार्टर' में उन्होने शहरी जीवन को दिखाया है शंकर और राधा शहर में रहने के लिए जाते है। एक क्वार्टर मिल जाने के बाद उन दोंनो को कोन–कोनसी समस्याओं का सामना करना पडता है और इस समस्याओं से दम्पत्य जीवन खराब होता है। मानसीक अंर्तद्वद्व पति–पत्नी में निर्माण हो जाता है। टूटन धूटन एवं सत्रास भी निर्माण होता है। दृ

'अपरिचित' इस कहानी में भी पति–पत्नी के आपसी समझदारी की कमी को लेखक ने यहॉ मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है।'एक ठहरा हुआ चाकू' मे भी राकेशजी ने मानसिक द्वव्द को लेकर यह कहानी की शुरुआत की है। इस कहानी द्वारा मनुष्य के मन की स्थिति को दिखाया है कि मनुष्य कैसे अपने मन के साथ सच बोलने के लिए संघर्ष करता है। और अंतिम बार वह अपनी समस्यासे झूलसकर मानसिकता खो बैठता है इस का यथार्थ इस कहानी में है। उनके सभी कहानीयॉ सामाजिक समस्या ओ के आधार पर ही नही मनोवैज्ञानिक आधार पर ही लिखी गयी है। पति–पत्नी के संबंधों को लेकर अनेक कहानियॉं लिखी है। उनके नगभग ६४ कहानियॉं है उस में से अधिकतर कहानियॉ में मनोविज्ञान दिखाई देता है।

मोहन राकेशजी आधुनिक उपन्यास कारों में प्रसिध्द है। उनके सिर्फ ०३ ही उपन्यास है जो समग्र जीवन का सथार्थ प्रस्तुत करते है। उनके उपन्यासों में अंधेरे बंद कमरे मेंय अंतराल और न आनेवाला कल है। अंधेरे बंद कमरे में हरबंस और नीलिमा के मन की स्थिति को दिखाया है। अंतराल में भी मनों वैज्ञानिक तौर पर चित्रण है। और न आनेवाला कल तो पूरा मनोंवैज्ञानिक उपन्यास माना जाता है।

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत मोहन राकेश कृत अंधेरे बंध कमरे में उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर भारत के आधुनिकतम जीवन की निराशाओं और आकांक्षाओं का सवेंदनमय प्रतिरुप सफलता पूर्वक प्रस्तुत करने का साहसिक प्रयत्न किया गया है। इस में लेखक ने पात्रों की सूक्ष्मतम मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को उपयुक्त परिवेश प्रदानकर उपन्यास कों मूर्त बनाने का सचेष्ट प्रयत्न किया है। उसके पात्रों मे मनोंवैज्ञानिक जटिलता अधिक है। जिसका कारण उनकी विशुध्द वैयक्तिक जरुरतों एवं मॉगों की जटिलता है। उपन्यास के पात्र जहॉ एक और समाज में रहते है वहॉ दूसरी ओर अपनी व्यक्तिगत कुंठाओं तथा भावनाओं के दबाब से पीडित व परेशान रहते हुए वे जीवन की प्रगति व प्रवाह पर आलोचनात्मक दृष्टि डालते है। हरवंश और नीलीमा के दाम्पत्य जीवन संबंधो का चित्रण है।आधुनिक परिवेश के कारण दाम्पत्य जीवन में आपसी अहॅ के कारण दरारे पड गई है। इस दाम्पत्य जीवन प्रेम का सौंदर्य नष्ट होकर उसमें घूटनय उब और एकरसता व्याप्त हो गई है। निलीमा का अहं अधिक हैं। हरवंश का चेतन मन समझता हैकि वह नीलिमा से अत्यधिक प्रेम करता है। मॉडर्न पति बनने की धुन में पत्नी को नृत्य सीखने के लिए वह प्रोसाहित्य करता है। अन्य व्यवहार केलिए खुली छूट केता है। इस उपन्यास में नीलिमा का अंर्तद्वद्व अधिक है। वह कहती है–"जैसे हम पति–पत्नी न होकर एक दूसरे के शुरमन हों और साथ रहकर एक दूसरे के लिए अजनवी थे।"(२)

हरवंस और नीलीमा के अंह आपस में टकराते है। उसके कारण उसका दाम्पत्य जीवन नरक बन जाता है। उनका अहं उनके मध्य एक गहरी खाई बना देती है। वे दोनो चाहकर भी इस गहरी खाई को भर नही पाते है। लेखक स्वय कहते है–"अंधेरे में भटकना और बंद होकर रहना उनकी मजबूरी है फिर भी वे एक ही कमरे में साथ–साथ है–यह कमरा उनकी साझी जिंदगी है। अंधेरा या बंद होने से मुक्ति एक दूसरे से हटकर उनके लिए नहीं हैं–न एक के लिए है और न दोंनो केलिए इस लिए रात–दिन आपस में टकराते हूए एक साथ जिये जाते है। क्योकि मुक्ति उनके लिए यादि है तो वह एक दूसरे की साझेदारी में हैं पर उन्हें मुक्ति नहीं मिलपाती"(३)

मोहन राकेशजी आधूकि हिंदी नाटक के मसिहा मान जाते है। उनके सिर्फ चार ही नाटक हैं जो प्रसिध्द हुए है। आषाढ का एक दिनय लहरों के राजहॅसय आर्धे–अधूरे और पैर तले की जमीन आदि। राकेशजी के नाटकों में भी मनोविज्ञान अधिक है। आषाढ का एक दिन का कालिदास और मल्लिका में मानसिक द्वंद अधिक है। लहरों के राजहॅस में नंद और सुंदरी का द्वंद है इसलिए इससे मनो विज्ञान अधिक मिलता है। आधे–आधूरे यथार्थवादी नाटक है इस में भी सावित्री और महेंद्र की मानसिक उलझन दिखाई देती है।पैर तले कि जमीन भी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखा गया है।

आर्धे–आधूरे में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण है।आज का समाज और उस की एक सूदृढ इकाइ परिवार विघटनशीलता के कगार पर आ पहुॅचा है। व्यक्ति न चाहते हुए भी भौगोलीक यांत्रिक दबाव मे आकर किस प्रकार अपने को बेसहारा अनूभव कर रहा है किस प्रकार युगानुरुप पारिवारिक संबंधो में एक आयाचित तनाव की स्थिति आगई हे और किस प्रकार महानगर में मूल्यविघटन हो रहे है इस का मूख्य कारण ही उस पात्रों की मानसिक द्वंद एक मानसिक टूटन है। नाटककारने सावित्री को आधी–आधूरी स्त्री दिखाकर यह मनोवैज्ञानिक

तथ्य हमारे सामने रखा है कि सामाजिक स्तरीकरण की भूख में एक स्त्री क्या कुछ करने को तत्पर हो जाती है। सावित्री अपने इसी आधे–आधूरे के कारण आवारा हो जाती है और बडे–बडे लोंगो कें संपर्क मे आती है। क्यों कि उसे व्याक्ति नही उस के पद से प्यार है और साथ रहकर वह पूरेपण अथवा पूर्ण व्यक्तित्व का एहसास करती है। इसका पुत्र अशोक उसके इस अपूर्ण व्यक्तित्व और उसकी खंडित चेतना का पर्दाफाश करता है। नायक महेद्रनाथ भी खंडित व्यक्ति का है। उसके माध्यम से नाटककार ने मध्यवर्गीय परिवार के निम्न मध्य वितिय परिवार के मुखियॉं के चरित्र को मनोवैज्ञानिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। महेंद्रनाथ की सबसे उपेक्षा की और इस उपेक्षा में विपथगामी बना दिया। सावित्री उसके आधे–अधूरे पन का बडा मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्र प्रस्तूत करती हूई कहती है–"जबसे मैने उसे जाना है मैने हमेशा हर चीज के लिए उसे किसी न किसी का सहारा ढूंढते पाया है।आपने आप पर उसे कभी किसी चीज के लिए भरोसा नही रहा जिंदगी में हर चीज की कसौटी जुनेजा जो सोचता हैय जो जुनेजा चाहता हैय जो जुनेजा करता हैय वही उसे भी सोचना हैय वही उसे भी चाहता है य्वही उसे भी करता हैय क्यों?क्यों कि जुनेजा तो एक पूरा आदमी है।"(४)
स्त्रियॉं यदापि पुरुष से पौरुष की मांग करती है किन्तु मनोंवैज्ञानिक कारणों से आज्ञाकारी और दब्बू पुरुष से ही व्याह करती है मूलत: उन्हे अधूरे पुरुष की ही तलाश होती है और उन्हें मिलते भी है।, पूरुष के प्रति उनके आकर्षण का मूलधार अप्राप्त की कल्पना भी होती है।

'लहरों के राजहैस' भी राकेश का मनोवैज्ञानिक नाटक है जिसमें नंद और सुंदरी के माध्यम से आजके मनुष्य के मन की स्थिति को दर्शाया है कि कैसे मनुष्य अपने मन ही मन में क्या–क्या सोचता रहता है और चाहते हुए भी कुछ नही कर पाता है। नन्द सुंदरी के प्रेम में इतना मग्न हो जाता है कि उसे समझ में नही आता कि वह सूंदरी को किस तरह समजाये कि वह जो कुछ कर रही है वह गलत है। सुंदरी का अभिमान अधिक है इसके कारण मानसिक द्वंद और बढ गया है।

RESEARCHJOURNEY

निष्कर्ष :–

अंत: हम कह सकते है कि आधुनिक साहित्य के प्रमूख हस्ताक्षर नाटककार एवं उपन्यास तथा कहानिकार के रुप में प्रसिध्द मोहन राकेश जी का साहित्य मनोविज्ञानसे भरा पडा है। उस में मानसिक द्वंद घूटन एंव खंडित व्यक्तित्व का तथा अंहवादीमन का चित्रण है। उसके साथ–साथ दाम्पत्य जीवन मे आए जितने भी घूटन है यहीं मानसीक विकृती एव प्रेम तथा सौंदर्य का बाधा है। जीवन के प्रति नैराश्य तथा एक दूसरों मे अजनबीपन अधिक दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

१. हिंदी साहित्य इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल –पृ.२२६
२. अंधेरे बंद कमरे मे– मोहन राकेश पृ.१५
३. ज्ञानोदय जुलाई १९६५– मोहन राकेश पृ.१५
४. आधे–आधूरे – मोहन राकेश पृ.३९

Amalpure sir 18-19

ISSN 2231-2137

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA

A Peer-Reviewed Multi-Disciplinary International Journal
UGC Approved Journal No. 62441, NAAS Score 2018 : 3.23
Impact Factor 2016 : 0.956 (GIF)

ॐ श्री

श्री भारत शिक्षण प्रसारक मंडळ संचलित

माऊली महाविद्यालय, वडाळा ता. उत्तर सोलापूर, जि. सोलापूर (महाराष्ट्र) व विद्यापीठ अनुदान आयोग आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्र

॥ संत साहित्याचे योगदान ॥

विशेष अंक

संत तुकाराम बिज, शनिवार ३ मार्च २०१८

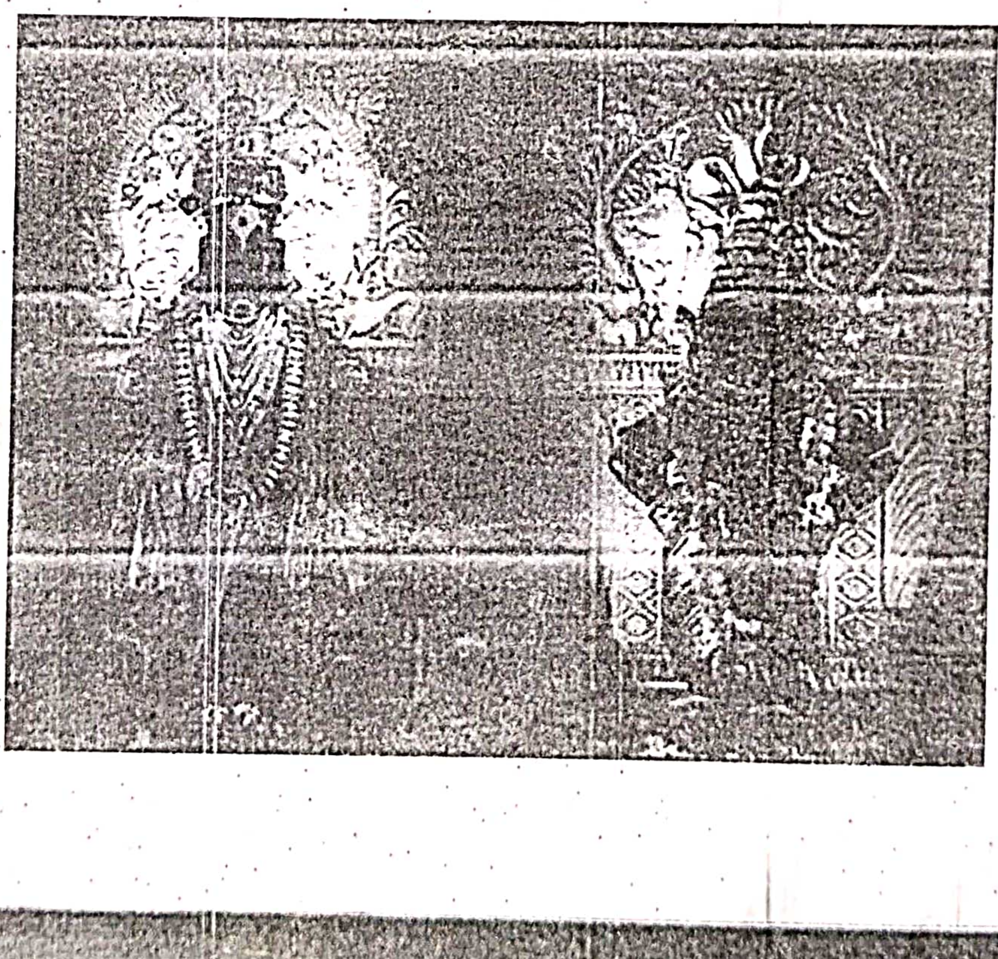

Contemporary Research in India (ISSN 2231-2137): UGC Approved Journal No. 62441 - NAAS Score 2018: 3.23

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

"मराठी और हिंदी संत साहित्य में सामाजिक मूल्य"

प्रा. आमलपूरे सुर्यकांत विश्वनाथ, हिंदी विभाग अध्यक्ष, डॉ. श्री. नानासाहेब धर्माधिकारी महाविद्यालय, गोवे कोलाड, ता. रोहा, जि. रायगड, महाराष्ट्र

Received: 17/01/2018 | Edited: 25/01/2018 | Accepted & Published: 03/03/2018

प्रस्तावनाः राष्ट्रनिर्माण की पहली इकाई व्यक्ति है। व्यक्ति से परिवार परिवार से समाज, समाज से राज्य और राष्ट्र निर्माण होता है। हमारा भारत देश एक सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसमें ऋषियों मुनियों, संतों – भक्तों एवं दार्शनिकों की विशिष्ट भूमिका रही है। रामानुंजाचार्य, माधवाचार्य, रामानंद, वल्लभ, नरसी मेहता, चैतन्य प्रभु, तुकाराम, जनाबाई, बसवेश्वर, नानक, रहीम, रैदास, आदि साधु संतों की अखंड परंपरा विद्यमान है। इन सभी संतों ने राष्ट्र की अखंडता के लिए सामाजिक समरसता की भावना को प्रमुखता दी। महाभारत, रामायण, गीता, उपनिषद, वेद, कुरआन, बायबल, गुरु ग्रंथ साहेब आदि श्रेष्ठ ग्रंथ है। जिसमें हमें अपने जीवन को उन्नत बनाने के उपदेश भरे पडे है। दया, क्षमा, शांति, सत्य, प्रेम, अहिंसा, करुणा, सहिष्णूता आदि गुणों के बलपर मनुष्य स्वस्थ समाज जीवन की निर्मिती करता है।

आज 21 वी सदी में वैश्वीकरण के दौरपर भौतिक प्रगति भले हीं हो गई है, संगणक, मोबाईल, वाट्सअप, फेसबुक और तकनिकी तंत्रों का विकास हुआ है। सारी सुख सुविधायों के बावजूद भी आज का मनुष्य सुखी नहीं है। परिणामतः सर्वत्र मानवीय मूल्यों का –हास दिखाई देता है। ऐसी विषय स्थिति में भारतीय संतों का साहित्य ही स्वस्थ समाज निर्मिती में और राष्ट्र की सामाजिक एकता में अपना महनीय योगदान कर सकता है।

मराठी संत साहित्य में सामाजिक मूल्य

मराठी संत साहित्य में चक्रधर स्वामी, संत नामदेव, संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर, संत गोराकुंभार, संत एकनाथ, बहिणाबाई, संत तुकडोजी , संत गाडगेबाबा आदि महत्वपूर्ण नाम दिखाई देते है।

संत तुकाराम जी का योगदान केवल मराठी साहित्य में ही नहीं बल्कि पूरे भारतीय साहित्य में, विश्व साहित्य में मौलिक माना जाता है। कई देशों में उनके 'गाथों' पर संशोधन हो रहा है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपना गुरु मान लिया था । ऐसे महान मराठी संत तुकाराम का जन्म 1608 में देहु जिला पूणे में हुआ वे बनिया थे, साधु संतों की रुचि बढ गई, और अपनी साहूकारी समाप्त की दिन दुःखीयों के कष्ठ दूर करने के लिए वह प्रयास करते रहे। वह अपने अभंग में कहते है–

"उपकारासाठी बोलो हे उपाय,
येणेविण काय चाड आम्हां ।
बुडाता ही जन न देखवे डोळा,
येतो कळवळा म्हणवूनी ।। " [1]

अपने काल में उन्होंने अज्ञान, अंधश्रध्दा, जातपात, रुढी परं का विरोध भी किया है ।

जैसे – " शुध्दा, शुध्द निवडे कैसे
चर्म –मॉस भिन्न नाही । " [2]

इसमें व्यवस्था का विरोध करते हुए कहते है कि, ऊँच – नि छोटा–बडा, शुध्द– अशुध्द, स्पृश्य – अस्पृश्य मानना यह निरर्थक है ।

तत्कालिन समय में समाज में जादू टोना, होमहवन, तिर्थवृत्त भी विरोध किया है । मन्नत मॉगने का भी विरोध किया है –

" नवसे कन्या –पुत्र होती,
तरी का करने लागे पति । " [3]

अर्थात मन्नत मॉगने से नारी को संतान की प्राप्ति होती तो विवाह करने अर्थात मन्नत मॉगने से नारी को संतान की प्रा होती तो उसे विवाह करने कि क्या आवश्यकता है? यह सं उस समय उठायां था ।

अंत में मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है ऐसे कहते है जैसे

" जे का रंजले, गांजले त्यासी म्हणे जो आपुले, ।
तेची साधु ओळखावा, देव तेथेची जाणावा । ।" [4]

संत ज्ञानेश्वर जी का योगदान भारतीय साहित्य के साथ विदेशी साहित्य में भी है वे कहते है विश्व ही मेरा घर है । महान संत का जन्म 13 वे सदी में 1275 में आपेगांव में हुआ महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय को उद्घाटित करने का प्र प्रयास संत ज्ञानेश्वर ने हीं की थी । माऊली नाम से वे प्रसि माने जाते है । माऊली का अर्थ है पूरे विश्व की माता । उ प्रसिध्द ग्रंथ ज्ञानेश्वरी जो भागवत गिता का अनुवाद है पसायदान में तो विश्व कल्याण तथा समाज कल्याण की भा अधिक मिलती है । वे कहते है ।

"जे खळांची व्यंकटी सांडो । तथा सत्कर्मी रती ।।
भूता परस्परें जडो । मैत्र जिवांचे ।।
दलितांचे तिमिर जावो । विश्व स्वधर्म सूर्य पाहो ।।
जो जे वांछिल तो ते लाभो । प्राणी जात ।" [5]

संत एकनाथ जी का योगदान भी अधिक है । उनकी वि विषयक भक्ति भावना अभंगो में प्रस्फुटीत होती है. । एकनाथ

...महता इस बात में है कि उन्होंने तत्कालिन समाज में ...नवतावादी विचार रखने की कोशिश की है । शुद्र, दीन, दलित, ...तें इनके प्रति सहानुभूति का बिजारोपन किया है । छुआछुत ...भेद, जातिभेद के खिलाफ अपनी कलम चलाई है । वे जन्म से ...ह्मण थे, फिर भी जात–पात नहीं मानते थे । दलित जाति के ...रे बाल को गोद में लेकर उसे घर पहुँचाया था । इतनाही नहीं ...द भोजन दलित जाति के लोगों को खिलाकर ब्राम्हण और ...रों में साम्यवाद स्थापित किया था । उनका भारुड प्रसिध्द है, ...ें दलित जाति के सभी उपजातिपर उनके प्रति दयाभाव व्यक्त ...या है।

...दी संत साहित्य में सामाजिक मूल्य

हिंदी के संत साहित्यकारों में संत कबीरदास, संत ...लसीदास, संत सूरदास, संत मीराबाई, संत रैदास, संत दादू ...याल, संत नामक आदि महत्वपूर्ण संतों ने समाज सुधारके लिए ...पना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । डॉ. ष्यामसुंदर दास जी कहते ... – " जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूरदास जैसे ...सिध्द कवियों और महालाओं की दिव्य वाणी उनके अंतःकरणों ...निकलकर देश के कोने – कोने में फैली थी, उसे साहित्य के ...तिहास में सामान्यतः भक्तियुग कहते है । निश्चित ही वह हिंदी ...हित्य का स्वर्णयुग था ।"[6]

संत कबीरदास जी का स्थान पूरे हिंदी जगत में ही नहीं, ...व के सभी साहित्य में चिंतनीयएवं महत्वपूर्ण रहा है। मध्ययुग में ...दलित पंडितो एवं मैलियों के धार्मिक साम्राज्यवाद का विरोध ...बीरदास के नेतृत्व में ही हुआ था । कबीर का व्यक्तित्व इसलिए ...जोड है कि वे निरक्षर होकर भी सच्चे अर्थो में ज्ञान–भंडार के ...नी रहे है ।

उनके साहित्य में राम–रहीम की एकता, जाति प्रथा का ...डण, मूर्तिपूजा का विरोध, अंध्दश्रध्दा, रुढर परंपरा, धार्मिक ...डंबर का विरोध आदि सामाजिक मूल्यों का दर्शन मिलता है। डॉ. ...जारी प्रसाद व्दिवेदी जी के शब्दों में "कबीर ऐसे मिलन बिंदु ...खडे थे जहाँ एक ओर हिंदुत्व निकलता है, दुसरी ओर ...सलमानत्व, जहाँ से एक ओर ज्ञान निकलता है, तो दूसरी और ...क्तिधारा प्रवाहित होती है, और योगमार्ग प्रशस्त होता है । जहाँ एक ओर ज्ञान निर्गुण भावना निकलती और दूसरी और सगुण साधना । उसी प्रशस्त चौराहे पर वे खडे थे ।"[7]

"जाँति – पाँति पूछो ना कोई
हरि को भजे सो हरि का होई ।"
मत पूछो साधू की जात, पूछ लिजिए उनका ज्ञान
पडे रहने दो तलवार को मोल करो म्यान ।"[8]
धार्मिक एकता के बारे में कबीरदास जी कहते है –
" एक बूँद एकें मूलमूतर, एक चाय एक गूदा ।
एक जोति में सब उत्पन्ना, कौन ब्राम्हण कौन सूदा ।"[9]

संतगुरुनानक एक ऐसे कवि संत थे जो मध्ययुगीन हिंदुओ और मुसलमानों के बीच समन्वय स्थापित करने का सच्चा समाज कार्य किया है। उनके बारे में डॉ. जयराम मिश्र लिखते है – "गुरुनानक मध्ययुग के मौलिक चिंतक, क्रांतिकारी सुधारक, अव्दितीय युग निर्माता, महान देशभक्त, दीन – दुखियों के परम हितेशी तथा दूरदर्शी, राष्ट्रनिर्माता थे ।"[10]

संत तुलसीदास हिंदी साहित्य गगन के परम प्रकाशमय नक्षत्रों से माने जाते है । उनके लगभग 12 ग्रंथ प्रकाशित है । तत्कालिन समाज का आर्थिक चित्रण करते हुए लिखते है –

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बनिक कोन न बनिज न चाकर को चाकरी ।"[11]

संत रविदास जी आजके दलित कहनेवाले जाति के प्रतिनिधिक कवि माने जाते है । स्वंय कवि कहते है– मेरी जाति चमार है, स्वामी रामानंद से दिक्षा लेकर उनको गुरु बनाया कबीरदास जी को अपना बडाभाई मानते थे । उनका समाज के प्रति विचार व्यक्त करनेवाला पद इस प्रकार है –

"ऐसा चाहू राज में मिले सभी को अन्न
छोटे बडे सब समै बसे रैंदास रहे प्रसन्न।"[12]

निष्कर्षः इस प्रकार हम कह सकते है कि मराठी और हिंदी संत साहित्य में सामाजिकता को लेकर अनेक कवियों में समाजसुधार करने के लिए नए नए मूल्यों की खोज करके सामान्य भाषा में समाज के सामान्य लोगों का विकास हो इस उद्देश्य से अपना संदेश दिया है । आज भी इस सामाजिक मूल्यों की आवश्यकता कम नहीं है । इसलिए 21 वी शती में भी संत साहित्य एवं साहित्यिक विचारों की प्रासंगिकता दिखाई देती है।

...दर्भ ग्रंथ

1. संत तुकाराम – तुकाराम गाथा अभंग
2. वही
3. वही
4. वही
5. संत ज्ञानेश्वर – पसायदान
6. डॉ. श्याम सुंदर दास – शोधसार
7. डॉ. हजारी प्रसाद व्दिदी – कबीर ग्रंथावली
8. संत कबीरदास के दोहे – कबीर ग्रंथावली
9. वही
10. डॉ. जयराम मिश्र – गुरुनानक और उनका निर्गुण साधना
11. संत तुलसीदास
12. वही

Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-February-March-2019

Vol. – VI, Issue-I (A)

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
Vol. – VI, Issue-I(A)
ISSN : 2348-7143
Jan-Feb-March 2019

मोहन राकेश के साहित्य में मनोविज्ञान एक अध्ययन

श्री. सुर्यकांत विश्वनाथ आमलपुरे
डॉ.नानासाहेब धर्माधिकारी महाविद्यालय कोलाड
मुंबई विप्वविद्यालय मुंबई
मो.न.– ९४२१४५१७०३
Email id:- sureshamalpure@gmail.com

प्रस्तावना:—

साहित्य का संबंध मानव मन से प्रगाढ रुप में है अंत: साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्र चित्रण पर आधुणिक मनो विज्ञान एवं मनो विश्लेषनवाद का प्रभाव प्रमुख रुप में परिलक्षित होता है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। और साहित्यकार मानव व्यवहार का विश्लेषण करता है। पाश्चात्य कारों में फ्रायड एडलर एवं युग के सिध्दातोंका उपयोग अपने पात्रों के परित्रांकन में किया कै। हिंदी के कुछ उपन्यासकारों में अज्ञेय जैनेंद्र एवं जोशी ने एसे पात्रों की सजना की जो फ्रायड युंग एवं एडलर के सिंध्दांतो मे परिचालित है। इन चरित्रोंका समझने के लिए हमें फ्रायड युंग और एडलर के सिंध्दातों को मूलता समस लेना चाहिए हिंदी साहित्य इतिहास में रामचंद्र शुक्लाजी लिखते है।"फ्रायड ने अचेतन मन और काम भावना को मनोविश्लेशण में प्रमुख स्थान दिया फ्रायड काम भावना को मानव मन की मूल परिचालिका शक्ति मानता है उसके अनुसार धर्म अर्थ साहित्यऔर संस्कृति की मूल प्रेरणा यही काम वृत्ति है।—(१)

आधुनिक युग के सक्षत हस्ताक्ष्र एव प्रसिध्द नाटककार उपस्यासकार तथा कहानीकार के रुप में हिंदी साहित्य में प्रसिध्द मोहन राकेश जी माने जाते है। उनके साहित्य में तो मनोज्ञिान भरा पडा हैं। उनकी कहानीयाँ उपन्यास और नाटक किसी सामाजिक परिस्थिति को लेकर नहीं लिखे गये बल्की स्त्रि—पुरुष के संबंधो को लेकर उन्होने साहित्य लिखा। उनके अपने जीवन में भी दाम्पत्य जीवन को लेकर कई समस्याएँ थी। इसी लिए उन्होंने अपने साहित्य को अपने ही जीवन से प्रेरित होकर लिखा है।

उनकी प्रसिंध्द कहानी 'क्वर्टर' में उन्होने शहरी जीवन को दिखाया है शंकर और राधा शहर में रहने के लिए जाते है। एक क्वार्टर मिल जाने के बाद उन दोनो को कोन—कोनसी समस्याओं का सामना करना पडमा है और इस समस्याओं से दम्पमत्य जीवन खराब होता है। मानसीक अंतर्द्द पति—पत्नी में निर्माण हो जाता है। टूटन धूरन एवं सत्रास भी निर्माण होता है। अपरिचित इस कहानी में भी पति—पत्नी के आपसी समझदारी की कमी को लेखक ने यहाँ मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है।'एक ठहरा हुआ चाकू मे भी राकेशजी ने मानसिक टुंद्व को लेकर यह कहानी की शुरुआत की है। इस कहानी द्वारा मणुष्य के मन की स्थिति को दिखाया है कि मनुष्य कैसे अपने मन के साथ सच बोलने के लिए संघर्ष करता है। और अंतिम बार वह अपनी समस्यासे झूलसकर मानसिकता खो बैठता है इस का यथार्थ इस कहानी में है। उनके सभी कहानीयाँ सामाजिक समस्या यों के आधार पर ही नही मनोवैज्ञानिक आधार पर ही लिखी गयी है। पति—पत्नी के संबंधों को लेकर अनेक कहानियाँ लिखी है। उनके नगभग ६४ कहानियाँ है उस में से अधितर कहानियाँ में मनो विज्ञान दिखाई देता है।

मोहन राकेशजी आधुनिक उपन्यास कारों में प्रसिध्द है। उनके सिर्फ ०३ ही उपन्यास है जो समग्र जीवन का सथार्थ प्रस्तुत करती है। उनके उपन्यासों में अंधेरे बंद कमरे में अंतराल और न आनेवाला कल है। अंधेरे

ISSN : 2348-7143
Jan-Feb-March 2019

बंद कमरे में हरबंस और नीलिमा के मन की स्थिति को दिखाया है। अंतराल में भी मनों वैज्ञानिक तौर पर चित्रण है। और न आनेवाला कल तो पूरा मनों वैज्ञानिक उपन्यास माना जाता है।

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत मोहन राकेश कृत अंधेरे बंध कमरे में उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर भारत के आधुनिकतम जीवन की निराशाओं और आकांशाओं का स्पंदनमय प्रतिरुप सफलता पूर्वक प्रस्तुत करने का साहसिक प्रयत्न किया गया है। इस में लेखक ने पात्रों की सूक्ष्मतम मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को उपयुक्त परिवेश प्रदानकर उपन्यास कें मूर्त बनाने का सचेष्ट प्रयत्न किया है। उसके पात्रों मे मनोंवैज्ञानिक जटिलता अधिक है। जिसका कारण उनकी विशुध्द वैयक्तिक जरुरतों एवं मॉंगों की जटिलता है। उपन्यास के पात्र जहाँ एक और समाज में रहते है वहाँ दूसरी ओर अपनी व्यक्तिगत कुंठाओं तथा भावनाओं के दबाब से पीडित व परेशान रहने हुए वे जीवन की प्रगति व प्रवाह पर आलोचनात्मक दृष्टि डालते है। हरवंश और नीलीमा के दाम्पत्य जीवन संबंधो का चित्रण है।आधुनिक परिवेश के कारण दामपत्य जीवन में आपसी अहँ के कारण दरारे पड गई है। इस दामपत्य जीवन प्रेम का सौंदर्य नष्ट होकर उसमें घटून उब और एकरसता व्याप्त हो गई है। निलीमा का अहं अधिक है। हरवंश का चेतन मन समझता हैकि वह नीलिमा से अत्यधिक प्रेम करता है। मॉडर्न पति बनने की धुन में पत्नी को नृत्य सीखने के लिए वह प्रोसाहित्य करता है। अन्य व्यवहार केलिए खुली छूट केता है। दस उपन्यास में नीलिमा का अंतर्द्वद्व अधिक है। वह कहती है।"जैसे हम पति–पत्नी न होकर एक दूसरे के शुरमन हों और साथ रहकर एक दूसरे के लिए अजनवी थे।"(२)

हरवंस और नीलीमा के अंह आपस में टकराते है। उसके कारण उसका दाम्पत्य जीवन नरक बन जाता है। उनका अहं उनके मध्य एक गहरी खाई बना देती है। वे दोंनो चाहकर भी इस गहरी खाई को भर नही पाते है। नेखक स्वय कहते है–"अंधेरे में भटकना और बंद होकर रहना उनकी मजबूरी हैफिर भी वे एक ही कमरे में साथ–साथ है–यह कमरा उनकी साझी जिंदगी है। अंधेरा या बंद होने से मुक्लि एक दूसरे से हटकर उनके लिए नहीं हैं–न एक के लिए है और न दोंनो केलिए इस लिए रात–दिन आपस में टकराते हुए एक साथ जिये जाते है।क्यों कि मुक्लि उनके लिए यादि है तो वह एक दूसरे की साझेदारी में हैं।पर उन्हें मुक्ति नहीं मिलपाती"(३)

मोहन राकेशजी आधूकि हिंदी नाटक के मसिहा मान जाते है। उनके सिर्फ चार ही नाटक हैं जरे प्रसिध्द हुए है। आषाढ का एकदिन लहरों के राजहँस आर्धे–अधूरे और पैर तले की जमीन आ दि। राकेशजी के नाटकों में भी मनो विज्ञान अधिक है। आषाढ का एक दिन का कालिदास और मल्लिका में मानसिक द्वंद अधिक है। लहरों के राजहॅस में नंद और सुंदरी का द्वंद है इसलिए इससे मनो विज्ञान अधिक मिलता है। आधे–आधूरे यथार्थवादी नाटक है इस में भी सावित्री और महेंद्रकी मानसिक उरुझन दिखाई देती है।पैरले कि जमीन भी मनो वैज्ञानिक पृष्ठभूमि को लेकर लिया गया है।

आधें–अधूरे में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण है।आज का समाज और उस की एक सूदृढ इकारि परिवार विघटन शालिता के कगार पर आ पहुँचा है।व्यक्ति न चाहते हुए भी भौगोलीक यांत्रिक दबाव मे आकर किस प्रकार अपने कोबेसहारा अनूभव कर तहा हैकिस प्रकार युगातुरुप पारिवारिक संबंधो में एक आयाचित तनाव की स्थिति आगई हेऔर किस प्रकार महानगर में मूल्यविघटन हो रहे है इस का मूख्य कारण ही उस पात्रों की मानसिक द्वंद एक मानसिक टूटन है। नाटककारने सावित्री को आधी–आधूरी स्त्री दिखाकर यह मनो वैज्ञानिक तथ्य हमारे सामने रखा है कि सामाजिक स्तरीकरण की भूख में एक स्त्री क्या कुछ करने को तत्पर हो जाती है। सावित्री अपने इसी आधे–आधूरे के कारण आवारा हो जाती है और बडे–बडे लोंगो के संपर्क मे अती है।

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
Vol. - VI, Issue-I(A)
ISSN : 2348-7143
Jan-Feb-March 2019

क्यों कि उसे व्याक्ति नही उस के पद से प्यार है और साथ रहकर वह पूरेपण अथवा पूर्ण व्यक्तित्व का एहसास करती है इसका पुत्र अशोक उसके इस अपूर्ण व्यक्तित्व और उसकी खंडित चेतना का पर्दाफाश करता है। नायक महेद्रनाथ भी खंडित व्यक्तिक है। उसके माध्यम से नाटककार ने मध्यवर्गीय परिवार के निम्न मध्य वित्तिय परिवार के मुखियों के चरित्र को मनोवैज्ञानिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। महेंद्रनाथ की सबसे उपेक्षा को और इस उपेक्षा में विपथगामी बना दिया सावित्री उसके आधे—अधूरे पन का बडा मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्र प्रस्तूत करती हूई कहती है।"जबसे मैने उसे जाना है मैने हमेशा हर चीज के लिए उसे किसी न किसी का सहारा ढूँढते पाया है।आपने आप पर उसे कभी किसी चीज के लिए भरोसा नही रहा जिंदगी में हर चीज की कसौटी जुनेजा जो सोचता है जो जुनेजा चाहता है जो जुनेजा करता है वही उसे भी सोचना है वही उसे भी चाहता है वही उसे भी करना है क्यों?क्यों कि जुनेजा तो एक पूरा आदमी है।"(४)

स्त्रियॉ यदापि पुरुष से पौरुष की मांग करती है किन्तु मनोंवैज्ञानिक कारणों से आज्ञाकारी और दब्बू पुरुष से ही ब्याह करती है मूलत: उन्हे अधूरे पुरुष को ही तलाश होती है और उन्हें मिलते भी है।पूरुष के प्रति उनके आकर्षण का मूलधार अप्राप्त की कन्पना भी होती है।

'लहरों के राजहैस' भी राकेश का मनोवैज्ञानिक नाटक है जिसमें नंद और सुंदरी के माध्यम से आजके मनुष्य के मन की स्थिति को दर्शाया है कि कैसे मनुष्य अपने म नही मन में क्या—क्या सोचता रहता है और चाहते हुए भी कुछ नही कर पाता है। नन्द सुंदरी के प्रेम में इतना मग्न हो जाता है कि उसे समझ में नही आता ि कवह सूंदरी को कि तरह समजाये ि कवह जो कुछ कर रही हैवह गलत है।सुंदरी का अभिमान अधिक है इसके कारण मानसिक द्वंद और बढ गया है।

निष्कर्ष :—

अंत: हम कह सकते है कि आधुनिक साहित्य के प्रमूख हस्ताक्षर नाटककार एवं उपन्यास तथा कहानिकार के रुप में प्रसिध्द मोहन राकेश जी का साहित्य मनो विज्ञानसे भ्रा पडा है।उस में मानसिक द्वंद घूटन एंव खंडित व्यक्तित्व का तथाअंहवादीमन का चित्रण है।उसके साथ—साथ दाम्पत्य जीवन ने आए जितने भी घुटन है यहीं मानसीक विकृती एव प्रेम तथा सौंदर्य का बाधा है। जीवन के प्रति नैराश्य तथा एव दूसरों मे अजनबीपन अधिक दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ :—

१. हिंदी साहित्य इतिहास — आचार्य रामचंद्र शुक्ल —पृ.२२६
२. ,अंधेरे बंद कमरे— मोहन राकेश पृ.१५
३. ज्ञानोदय जुलाई १९६५— मोहन राकेश पृ.१५
४. आधे—आधूरे — मोहन राकेश पृ.३९

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-November-December 2019

Vol. 6 Issue 4 (B)

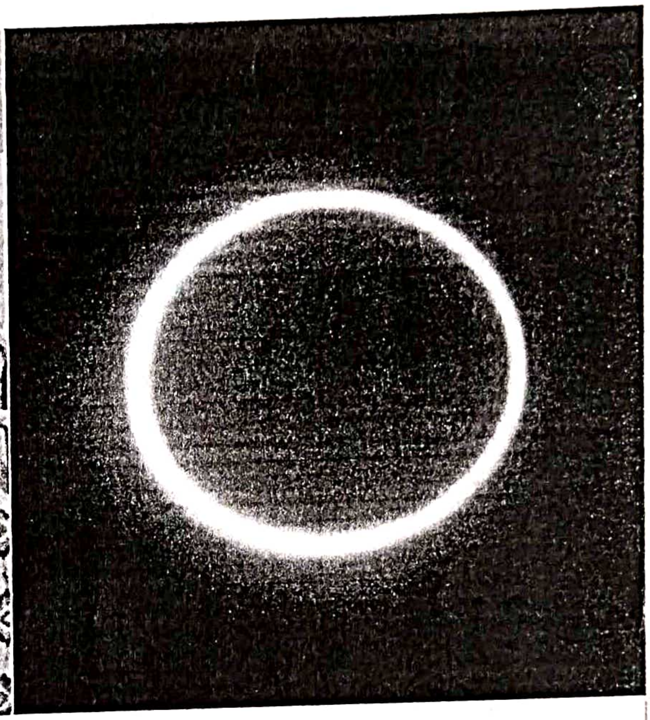

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Vol. 6, Issue 4 (B)
Peer Reviewed Journal

E-ISSN : 2348-7143
Oct. Nov. Dec. 2019

भारतीय साहित्य की कालजयी कृतीयाँ एक अध्ययन

आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
श्री.नानासाहेब धर्माधिकारी महाविद्यालय गोवे कोलाड
ता.रोहा जि. रायगड ४०२३०४
मुंबई विश्वविद्यालय,मुबंई
मो.९४२१४५१७०३
Email id: surshamalpure@gmail.com

प्रस्तावना :–

साहित्य समाज का दर्पण होता है। वह समय का सहचर होता है। यहाँ समय की स्केल पर ही समाज का लेखा– जोखा दर्ज होता है। समूचे भारतीय साहित्य की वैचारिक केंद्र में मनुष्य और उसका समाज ही रहा है। वह परम्परा और आधुनिकता लोक और कुलिनता इतिहास और वर्तमान को ध्यान में रखकर समाज को विवेचित करता रहा है। साहित्य को इसी लिए अपने समय का सबसे प्रामाणिक साक्ष्य कहा गया है। वैसे भी तथ्य और सत्य दोंनो की आराधना साहित्य का विषय होता है। भारतीय साहित्य चिंतन की जितनी भी सरणियाँ है उनके केंद्र में प्रकारान्तर से मानव कल्याण के बीज छिपे हुए है। साहित्य के बहाने भारतीय समाज एवं इतिहास को समझने तथा चिंतन करने के लिए समक्ष उठनेवाली चुनौतियों को समझने का प्रयत्न साहित्य में होता है। इसीलिए साहित्य मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

मनुष्य की अभिव्यक्ति की लालसा प्राचीन बात है। भाषा के विकास के साथ इस प्रवृत्ति का धीरे–धीरे विकास होता रहा, कहानी भी बनती रही। समाज और समय हमेशा एक सा न रहता है, न रहा है। अंत: साहित्य में इस का यथार्थ चित्रण रचनाकार करते रहे। प्रारंभ में यह साहित्य मनोरंजन, नीतिप्रधान, ज्ञानप्रधान, आध्यात्मिक रही। इस के पश्चात उसका मनोरंजनकारी रुप सर्वोपरी बन गया। आज के इसी साहित्य मे समाज के सभी क्षेत्रोंका यथार्थ चित्रण हो रहा है। ऐसे ही कालजयी कृतीयाँ जो लिखी गयी उस पर यहा हम विवेचन करेंगे।

(अ) कालजयी सामाजिक कहानी 'कफन'

हिंदी साहित्य के कालजयी रचनाकार उपन्यास एवं कहानी सम्राट प्रेमचंद जी को कहा जाता है। हिंदी के कथा साहित्य की चर्चा प्रेमचंदजी को टालकर संभव ही नहीं है। वे आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार थे। असल में प्रेमचंद जी समाज के यथार्थ को जितनी सूक्ष्मता से जानते थे, उनकी खूबी से शायद ही कोई जानता हो। इनके बारे में भीष्म सहानी लिखते है–

" प्रेमचंद की सबसे दर्दनाक कहानियाँ वे हैं जो भूख प्यास और ठिठुरन आदि ने इर्द–गिर्द बुनी हुई है, जीवन की अति–साधारण माँगो के परिप्रेक्ष्म में वे इंसान को जिंदगी और मौत से जूझता हुआ दिखाते है, उनके जीवन की दारूण स्थिति इन्हीं पर केंद्रीय होकर सामने आती है।...... लगता है गरीब की दुनिया में सब कुछ गौण है, प्रसूति में चिल्लाने और अंत में दम तोड देणे वाली पत्नी गौण है,पिता–पुत्र और पति–पत्नी का रिश्ता भी गौण है, भूने हुए दो आलू सबसे अधिक महत्व रखते है। यह वह दुनिया है जहाँ भूख ने सभी मूल्यों को असंगत बना दिया है। इस वातावरण में उतरने पर प्रेमचंद पाते है कि भद्र समाज में पाए जाने वाले मूल्यों का यहाँ कोई अर्थ नही रह गया है।"– (१)

लेकिन होरी को ये सारे कार्य बहुत भारी पडते हैं। गाय के मरने का प्रायश्चित धर्म के लिए और झुनिया को इस तरह रखने का दन्ड बिरादरी के लिए दोनों इसी घटना से होरी कंगाल हो जाता है। सारी फसल का अनाज भी चला जाता है। उधर बेटी के कारण भोला भी नाराज हो गया है। वह गाय का पैसा बार–बार माँगता है। फिर पैसे न मिलने पर भोला ने होरी का एक बैल उसके बदले ले जाता है। इसी तरह होरी किसान से मजदूर बन जाता है। यह प्रक्रिया प्रेमचंदजी ने खूब जगहों पर दिखाई है। 'सवा सेर गहूँ' में भी शंकर की यही हालत हो जाती है।

कर्ज की समस्या तो किसान के लिए हमेशा गले का फाँस बनी रहती है। यही जमींदार रायसाहब, पं दातादीनय पटेवरी लालय नोखेलाल और सहु आईन मे लोग बडे साहूकार तथा सबसे बडे जमींदार लोग है जो किसान एवं मजदूर का सूद पर पैसा देकर किसानों को हमेशा लुटने का काम करते है। उनके नाम की जमीन अपने नाम से कर देते है। राय साहब की तो लगान है। इस प्रकार शोषक और शोषित का बडा साधा स्वरूप और प्रक्रिया यहाँ दिखाई देती है।

होरी जैसा सरल सभ्य किसान तो हाट में फसल बेचकर खाली हाथ घर आता है। रास्ते में ही महाजन लोग सब वसूल लेते है।

इधर उपन्यास का नामक होरी मजदूर होकर पंडित दातादीन के यहाँ काम करने लगता है और भूखे पेट काम करते–करते बेहोश हो जाता है। ऊधर गोबर शहर में अच्छा काम करता है बहुत सारे पैसे शहर से लाता है और अपने पिता को किस तरह ये महाजन लोग लूट रहे है। परंतू महाजनों के डर से अपने संस्कारों के आगे होरी विरोध नही कर पाता इससे नाराज होकर गोबर अपने परिवार को लेकर शहर चला जाता है। अब होरी दिन –ब–दिन बहुत खेत मे काम करने लगा। एका एक एक दिन दस बजे से ही लू चलने लगी और दोपहर होते–होते वो आग बरस रही थी। एक लोटा पानी पीकर लेटा रहा मगर आधा कै हो गई और चेहरे पर मुर्दनी सी छा गई फिर हाथ–पाँव ठण्डे होने लगे। आँखें बंद हो गई एक घंटो में धनिया दौडी हूई आ पहुँची। धनिया ने होरी की देह छुई तो उस का कलेजा सन से हो गया मुख कांतिहीन हो गया था। हुई झवाज से बोली – 'कैसा जी है तुम्हारा ?'–(५)

अस्थिर आँखो से देखा और होरी बोला– "तुम आ गए गोवर ? मैने मंगल के लिए गाय ली है,देखो।"–(६)

धनिया ने मौत की सूरत देखी थी।उसे पहचीनती थी। उसके सामने सास मरी,ससुर मराय अपने दो बालक मरेय गाँव के कई आदमी मरे। प्राण में एक धक्का–सा लगा। उमडते हुए आँसुओं को रोककर बोली– "तेरी ओर देखो मैं हुँ क्या मुझे नही पहचानते ?"–(७)

होरी की चेतना लौटी वह दीन आँखों से देखा और क्षीण स्वर में बोला– "मेरा कहा सुना माफ करना धनिया। अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गई। अब तो यहाँ के रूपये क्रिया करम में जायेंगे। रो मत धनिया अब कब तक जिलाएगी ? सब दुर्दशा तो हो गई। अब मरने दो।"–(८)

और उसकी आँखे फिर बंद हो गई। उसी वक्त हीरा और शोभा डोली लेकर पहूँच गए।होरी को उठाकर डोली में लिटाया और गाँव की ओर चले। गाँव में यही खबर हवा की तरह फैली। सारा गाँव जमा हो गया। धनिया मंत्र की भाति होरी की दकह में गेहूँ की भूसी की मालीश कर रही थी। क्या करें पैसे नही है नही धनिया को–" भाभी दिल को कडा करो गो–दान करादो दादा चले।"–(९)

E-ISSN : 2348-7143
Oct. Nov.-Dec. 2019

कफन कहानी के प्रारंभ में प्रसव– वेदना से तडपती बुधिया की नाजुक हालत पर धीसू और माधव के बीच बातें होती है। पत्नी बुधिया का तडपना और हाथ– पॉव पटकना माधवसे देखा नहीं जाता है, तब वह कहता है– " मरना ही है तो जल्दी क्यों नहीं जाती। देखकर क्या करूँ? – (२)

इस प्रकार प्रारंभ में ही दोनों पात्रों के समताहीन स्वभाव और दयनीय स्थिति का परिचय मिलता है। धीसू–माधव को झोपडी के अंदर जाकर बुधिया को देख आने की सलाह देता है लेकिन माधव बहाना बनाकर कि कहता है– " मुझे वहाँ जाते डर लगता है। डर किस बात का है, मैं तो यहाँ हूँ ही।"–(३)

वहाँ से अंदर जाना नहीं चाहता है। उल्टे जब वह घिसू से कहता है। इससे दोनों का उथलपुथल मानसिकता स्पष्ट दिखाई देती है।

इस कहानी में घीसू ठाकूर के घर बीस साल पहले जमकर किए गए भोजन का वर्णन करता है। फिर बुधिया के मृत्यू के बाद जमींदार के द्वार पर कफन के लिए धन मॉगने के लिए दोनों जाते है। यहाँ जमींदार की फटकार दोनों की लाचारी आदि भावों का परिचय मिलता है। पॉच रू प्राप्त होने पर दोनों कफन खरीदने के बदले मधुशाला की ओर बढते है। बुधिया की मृत्यू की उन्हे बार–बार याद आती है। माधव शोक व्यक्त करता है तो धीसू उसे आशीर्वाद देता है कि वह सीधे स्वर्ग जाएगी। इसी तरह धीसू और माधव के माध्यमसे प्रेमचंद जी ने सामाजीक जीवन की विसंगतियों और विडंबनाओं को परत–दर–परत उदाडता चला जाता है और इन नकारात्मक पात्रों के आधार रूप मानकर उस समाज का पूरा विश्लेषण कर देता है जो इस प्रकार के पात्रों को जन्म देता है। प्रसिध्द आलोचक डॉ. रामदरश मिश्राजी लिखते है–

" कफन प्रेमचंद की कथा चेतना और संरचना में बदलाव उपस्थित करनेवाली एक श्रेष्ट कहानी है। यह कहानी आद्योपांत यथार्थ की ही यात्रा करती है और अपनी संरचना को नैतिक समाधान तूलक अंतिम बिंदू के शासन से मुक्त करती है।"–(४)

(ब)भारतीय सामाजीक कालजयी उपन्यास –गोदान

प्रेमचंद का गोदान विश्व प्रसिध्द उपन्यास है। भारतीय किसान जीवन की जीती जागती तस्वीर पेश करने वाली यह रचना उत्तरभारतीय समाज व्यवस्था एवं संस्कृति का दस्तावेज भी है।

गोदान की प्रमुख कथा होरी नामक एक किसान की है। उस का सम्मिलित परिवार अभी–अभी बटवारा करके अलग हुआ है। शोभा और हिरा अब अलग रहते है। अब होरी के परिवार में पत्नी धनीयाँ है दो बेटीयाँ सोना–रूपा है और बेटा गोबर है। हिंदू समाज में गाय को मॉ का रूप माना जाता है। उसकी पुँछ पकडकर ही स्वर्ग जाया जा सकता है अंत: होरी की तमन्ना भी गाय लेने की होती है। जब भोलासे दास्ती होती है तो उससे एक गाय उधार लाता है। पर छोटे भाईयों को लगता है की हारीने पैसे दबा लिये थे अब गाय के लिए पैसे निकाल रहा है। इसी ईर्ष्या एवं क्रोध में आकर छोटा भाई हिरा गाय को जहर दे देता है। पाप बोध के प्रायश्चित से स्वंय तो घर छोडकर भाग जाता है, परिवार का भार होरी को उठाना पडता है। यह सज्जनता ही होरी जैसे भारतीय किसान के दु:खो की जड है।

गाय लाने के बहाने भोला की ज्वान विधवा बेटी झुनिया से गोबर का प्रेम होता है। वह गर्भवती बनती है तब मजबूरन उसे घर लाता है। इस को स्वीकार करता होरी। होरी की मनुष्यता पुन: झुनिया को भी बहू का सम्मान देती है– विधवा झुनिया को बिन ब्याहे घर आयी झुनिया को यही प्रगतिशील दृष्टि प्रेमचंदजी की है। विधवा विवाह उन्होने स्वंय किया था।

E-ISSN : 2348-7143
Oct- Nov- Dec 2019

धनिया ने उसकी ओर तिरस्कार की आँखोसे देखा। और कई आवाजे आ गई– हाँ गो –दान करा दो अब यही समय है। धनिया यंत्र की भाँति उठी आज जो सुतली बेची थी उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खडे दातादिन से बोली – "महाराज घर में न गाय है न बछिया न पैसा। यही पैसे है यही इन का गो–दान है।" धनिया पछड खाकर गिर पडी।

इस प्रकार पूरे उपन्यास की सोददेशता इस प्रकार स्पष्ट होती है कि भारतीय किसान जीवन एवं उत्तर भारतीय समाज एवं संस्कृति तथा व्यावस्था की गहरी पहचान इस में निहित है।

सरांश:–

साहित्य समाज का दर्पण होता है इस अर्थ को प्रेमचंदजी ने अपनी कहानी कफन और उपन्यास गोदान को पाठकों के सामने रखकर भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने का सफल कार्य किया है। प्रचलित रूढिग्रस्त व्यावस्था को तोडकर सहज मानवीय संबंध की स्थापना की प्रगतिशील दृष्टि के विभिन्न प्रसंग उनके साहित्य में मिलते है। उनकी ये दोनो कालजयी कृतियाँ आज भी यथार्थ लगती है। आज भी किसान की समस्या आत्महत्या एवं मजदूरों का शोषन हमेशा हो रहा है किसान फाँसी के फंदेपर लटक रहा है। उसकी असस्था दिन–ब–दिन होरी माधव धीसू की तरह हो रही है।

मरते दम तक काम करने वाले हमारे किसान खुद को संकट में डालकर दूसरों को सुख देने वाले हमारे मजदूर की यह कहानी प्रेमचंदजी ने गोदान इस उपन्यास के माध्यम से प्रस्तूत की है। यह रचना सोददेश्य रचना है। शोषन और शोषक स्पष्ट करती है। उनकी यह कृति हिंदी भाषा एवं भारतीय साहित्य में विशेष महत्व रखती है। इसी रचना ने कई कीर्तिमान पैदा किए गए है। प्रेमचंदजी की जीवन –दृष्टि को वह स्पष्ट करती है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. भिष्म सहानी–लेख पृ. १०
२. कफन–प्रेमचंद पृ.२०
३. वही पृ २८
४. डॉ.रामदरश मिश्र–समीक्षा पृ ४७
५. गोदान–प्रेमचंद पृ ३३
६. वही पृ.५२
७. वही पृ.७७
८. वही पृ ८०
९. वही पृ ८५

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - X Issue - II April - June - 2021

ENGLISH PART - II

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

7. Crisis of Covid-19 and India: Implications, Challenges and Remedies

Prof. Miss Nehal Anil Pradhan
Asstt. Prof., Dr. SND Arts, Commerce & Science College, Gove-Kolad, Tal. Roha, Dist. Raigad.

Abstract

The country India, who has the second largest population in the world, is suffering severely from Covid-19. The Covid-19 pandemic has brought major challenges to health care systems and public health policies globally, as it requires to adapt the impact of the pandemic. Individuals with substance user disorders (SUD) are at risk population for contamination due to multiple factors – attributable to their clinical, psychological and psychosocial conditions. Specific strategies for prevention and treatment must be discussed. Health care professionals dealing with SUD must be aware of the risks and challenges they will meet during and after the Covid-19 outbreak. This paper is intended to study the repercussions of Corona virus on different sectors of Indian economy and to highlight the reasons for which India can be benefited in the past pandemic period.

Keywords: Corona Virus, India, pandemic, sectors, crisis, environment, human life, lockdown, social distance.

Introduction

The Covid-19 pandemic has brought the entire nation to a halt. Health officials and medical professionals are struggling with containing the disease and testing & treating affected people. Covid-19 will have major economic implications for rural and urban area. The risk of spread in rural areas and urban areas is height ended. The informal industry in cities being badly affected has resulted in loss of rural and urban income. The impact of Corona virus or Covid-19 on domestic and international businesses is severe across countries and all sectors.

In countries like India, we are seeing how high population densities coupled with the impossibility of physical distancing in small housing units, lack of running water and toilets, shortage of hygiene materials and personal protective equipment can exacerbate infection rate in several clusters that t hen become hot spots or red zones for the pandemic. This paper highlights how to overcome the challenges and the remedies.

Objectives

1. To highlight the implication of Corona virus on the India's urban and rural areas and all sectors related to economy.
2. To survive in this tough situation related to all sectors as well as health of Indian public.
3. Rebuilding localized robust supply chains could help fight possible future pandemics.
4. To study challenges and solve the problems related health care, economic, social background of India.
5. To prevent the transmission of Corona virus and economical conditions in India.

Research Methodology

In my research paper I have used secondary data, some articles, novels and Government reports and World Wide Web.

Implications

As per the official government guidelines India is making preparations against the Covid-19 outbreak and avoiding specific crisis actions or not understanding its importance will have extremely severe implications. All the neighboring countries of India have reported positive Covid-19 cases. To protect against the deadly virus, the Indian government has taken necessary and strict measures including establishing health check post between the national borders to test whether people entering the country have the virus. Researchers believe that this phenomenon is normal for many viruses. India with a population of more than 1.34 billion the second largest population in the world will have difficulty treating severe Covid-19 cases because the country has only 49,000 ventilators, which is minimal amount. The number of Covid-19 cases increases in the nation, it would be catastrophe for India. A study has shown that, owing to inadequate medical care systems, nearly 1 million people die every year in India.

India is also engaged in trading with its nearby countries such as Bangladesh, Bhutan, Pakistan, Myanmar, China and Nepal. The financial year 2017-18 Indian regional trade amounted to nearly $ 12 billion accounting for only 1.56% of its total global trade value of $ 769 billion. The outbreak of such viruses and their transmission would significantly affect the Indian economy. The outbreak in China could profoundly affect the Indian economy especially in the sectors of electronics, pharmaceuticals and logistic operations as trade ports with China are currently closed. This was further supported by the statement by Mr. Suyash Choudhary, Head, Fixed Income, IDFC, AMC, stating that GDP might decrease owing to Covid-19.

To effectively achieve this objective, entire country had to be shut and all activities had to be stopped with minimal human interaction. Hence, inevitably the country had to be brought under lockdown. The Indian government started taking a strong stand against this pandemic attack in the mid of March. By the last week of March, India sealed all internal and external borders. From March 22, the whole country was under lockdown phase which was extended till May 3, 2020.

Challenges during Covid-19

The masses have stood by the government during this lockdown and a great response is observed throughout the country. There are certain exceptions which are a challenge. While nearly 95% of the citizens are co-operating, the rest are creating a threat to the efforts and measures to contain this pandemic and are responsible for the collapse of the whole system.

Environmental problems

The collapse of essential trading partners. The society's response to the foregoing four factors. In today's situation, the first three factors are viable threats to our nation. The Covid-19 crisis can be the trigger for the fourth factor of failing trade due to a weakened economy. The hostility faced by common people from their neighbors in the society. The basic reasons of such hostility lie in the comparative behavior or attitude of t he people in many small instances such as purchasing of small grocery items, vegetables, petrol and getting official permission to go out for essential/emergency reasons.

Cases of hostility can be observed in housing societies regarding residents having recent travel history from other countries. Such residents responded adversely when requested by the fellow society neighbors to get them tested for Covid-19 or to get self-isolated. Instead such individuals misunderstood, misbehaved and even reacted aggressively by getting into a fight with their neighbors. Such cases have been observed in affluent class or upper-middle class societies. Analyzing the scenario in lower class or slum areas, a similar mentality is seen, only the problem is different. An example of these, getting grocery on ration or free food packets. A midst free distribution of food and essential items to the needy and poor people were seen fighting amongst themselves in the race to get there first and even to the extent of snatching it from others. Members of the NGOs and social organizations engaged in community service during these times were also hackled and abused. This creates disharmony and jealousy which

ultimately leads to weakening of bonding between the neighbors. Though it may be a temporary phase, its implications are long lasting.

The two main reasons being reported for this surge in cases in rural areas are the returning migrants from major cities who did not undergo screening or were asymptomatic and the poor healthcare infrastructure in the rural settings. Out of a total of 739 districts in India, 13 districts (across 8 states and a Union Territory) account for 1 in seven Covid-19 deaths. The 13 districts are Kamrup metro inAssam, Patna in Bihar, Ranchi Jharkhand, Alappuzha nd Thiruvananthapuram in Kerala, Ganjam in Odisha, Lucknow in UP, North 24 parganas, Hooghly, Howrah, Kolkata and Maldah in West Bengal and Delhi. These districts account for nearly 9% of India's active cases and about 14% of Covid-19 deaths, faced the serious problems during the Covid-19 in all sectors.

Lockdown and travel bans due to Covid-19 have impacted almost every sector including tourism, hospitality and education. To deal with the Corona virus crisis, Central government has undertaken various initiatives like monetary relief packages.

Remedies related to crisis of Covid-19 in India

The Central government has undertaken various initiatives like monetary relief package under Pradhan Mantri Garib Kalyan Yojana, Uttar Pradesh Rojgar Abhiyaan, Atmanirbhar Abhiyaan. The State governments have also undertaken various initiatives like operation SHIELD, 5T Plan, Mission Fateh, Snehar Paras etc. Because of Covid-19 India has an additional challenge to deal with viz. a massive migrant workers crisis. Government provided help to workers through different yojana. India can learn from Covid-19 to build a healthier nation. Everyone wishes that India will learn from Covid-19, invest more in health and build a universal and comprehensive healthier system. India could have planned the lockdown better and avoided the massive internal migration crisis that followed. Nearly every Indian experts interviewed, emphasized this as the single biggest failure. Quality healthcare must include mental health, the importance primary healthcare. It has steadily focused more and more on tertiary care.

"The government believes that insurance funded, hospital-based care is the answer. We need to shift focus from 'sickness to wellness of the whole of society'. This can be done by focusing on determinate of health and prioritizing service delivery to the poor, women and marginalized communities.

India must work to build stronger active, surveillance and really focus on removing the scourge of TB and some of the other ancient diseases. Though both good public health policy as well as healthy public policy. India is widely recognized as the world's pharmacy and it now has the unique opportunity to deliver affordable Covid-19 vaccines for the whole world and help overcome the current vaccine scarcity and excessive reliance of the 'trickle down' model where products and innovations developed in the global north slowly trickle down to the global south. But even though India has developed indigenous Covid-19 vaccines, provide input tax relief to producers in selected sectors. We therefore hope this opens eyes and minds and that doctors, countries and patients who truly care about their health accept these remedies."

"We also hope that the government lists these remedies as part of the standard of care for Covid-19 as they truly bear the potential of saving lives, freeing up hospital space and helping people return to normal", they concluded. (indiatimes.com)

Everyday we go with Covid-19 pandemic with strong heart, hard work with will power with positive energy.

Conclusion

The whole world is in the grip of vicious Corona virus. A global health emergency along with social and economic crisis unleashing unprecedented collapse of the economic activities and business operations. This study has put forward the potential effects of Corona virus on the different sectors of Indian economy and the reasons for which India, one of the emerging economies in the world can be benefitted in this crisis period. The study highlights the implication, challenges and remedies with present situation. This study is important for the survival and helpful for future planning in all sectors, healthcare, human life and environmental system.

References

1. economictimes.indiatimes.com
2. en.wikipedia.org
3. blog.smallcase.com
4. m.economictimes.com
5. hrw.org.com

CONTENTS OF ENGLISH PART - II

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Corona Virus Halts Life of Construction Workers **Shital J. Shinde** **Dr. S. D. Takalkar**	1-3
2	Socio - Economic Impact of Covid-19 in India **Prof. Dr. Dewrao Sukhdeorao Manwar**	4-9
3	Nano - Based Prevention of COVID-19 **Dr. Ram S. Barkule**	10-12
4	Importance of Spirituality and Balanced Life in Relation with the Philosophical Implications of Covid-19 on Senior Citizen **Mrs. Pallavi Swapnil Kale**	13-19
5	Knowledge and Awareness of Students & Academic Community toward COVID-19 in Maharashtra: A Questionnaire-Based Survey **Nilkanth S. Bhalerao** **Anil S. Hiragond** **Santosh V. Jadhav**	20-26
6	A Study on Benefits of Learning Stress Management in College Students **Disket Angmo**	27-33
7	Crisis of Covid-19 and India: Implications, Challenges and Remedies **Prof. Miss Nehal Anil Pradhan**	34-38
8	Fluctuations of Rotifer Populations in Kal River at Mahad during Current Pandemic Covid-19 **Dr. Bhosale P. A.**	39-46
9	Social Media and Libraries in COVID-19 Pandemic **Mr. Anil Ananda Shirke**	47-52
10	Impact of Covid-19 on Indian Economy **Assit. Prof. Dunde S. S.**	53-58
11	Challenges of Online Education for Children with Special Need during COVID-19 **Kishor Mohan Bhattacharyya**	59-61